राधे ~ राधे

NAME ⇒ MONIKA KUMAWAT

SUBJECT ⇒ HINDI LITERATURE

CLASS ⇒ B.A. II[nd] SEMESTER

Address ⇒ Bera ki dhani (Boraj)

B.A - III^rd Semester

विषय - हिन्दी साहित्य

DATE 18/8/25
PAGE NO.:

इकाई - I

* रीतिकाल का सीमांकन एवं नामकरण
* रीतिकाल की परिस्थितियाँ (राजनीति, सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक)
* रीतिकाल काव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ
* रीतिकाल की प्रमुख धाराएँ (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त)

इकाई - II

(i) केशवदास - रामचन्द्रिका - रावण - अंगद पाठ्यक्रम संवाद

(ii) बिहार - बिहारी रत्नाकर
- मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ

(iii) देव - देव
- कालिन्दी - कूल भयो अनुकूल।

इकाई - III

(i) कवि भूषण
- उतरि पलंग ते न दियो है
धरा पै पग ----।

(ii) कवि घनानन्द
- अति सूधो सनेह को मारग है

(iii) आलम
- कंचन मे आँच गई चूनी चिनगारी भई ----।

इकाई - IV

(i) पद्माकर

• कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में ----।

(ii) सेनापति

• वृष कौ तरनि तेज सहसौ किरन करि ----।

इकाई - I

अध्याय → रीतिकाल

✱ अतिलघुरात्मक प्रश्न

Q. ① किसी आलोचक ने कवि केशव को रीतिकाल का प्रवचक माना है?

उत्तर ⇒ डॉ. नगेन्द्र ।

② रीति ग्रंथों की परम्परा के प्रवर्तक कौन है?

उत्तर ⇒ केशवदास ।

③ ~~रीतिकाल~~ व बिहारी रीतिकाल के किसी काव्य धारा के कवि है?

उत्तर ⇒ रीतिसिद्ध ।

④ रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त काव्य धारा के कवि के नाम बताए ।

उत्तर ⇒ रीतिबद्ध → आचार्य केशवदास
रीतिसिद्ध → कवि बिहारीलाल
रीतिमुक्त → कवि घनानंद

⑤ कवि बिहारी हिन्दी के किसी काल के कवि है?

उत्तर ⇒ रीतिकाल ।

⑥ रीतिकाल का काल चक्र बताए?

उत्तर ⇒ रीतिकाल का काल 1700 से 1900 ईस्वी तक माना जाता है ।

⑦ रीतिकाल के कुछ प्रमुख कवियों के नाम लिखिए?

उत्तर ⇒ केशवदास → कविप्रिया, रसिकप्रिया ।

बिहारी → सतसई
भूषण → शिवराज भूषण
मतिराम ⇒ रसराज, ~~ललितललास~~ ललितललाय
पद्माकर ⇒ जगविनोद, ~~पद्भ~~ पद्माभरण
चिंतामणि ⇒ कविकुलकल्पतरु
देव → काव्य रसायन, भावविलास
घनानंद → सुजान हित

(8) रीतिकाल का दूसरा नाम क्या है?
उत्तर ⇒ श्रृंगार काल।

(9) रीतिकाल के अन्तिम कवि कौन थे?
उत्तर ⇒ ग्वाल कवि (रीतिसंयकार)

(10) रीतिकाल का नया नाम क्या है?
उत्तर ⇒ अलकृत काल।

(11) रीतिकाल का अर्थ बताए।
उत्तर ⇒ रीति का शाब्दिक अर्थ → शैली या प्रणाली साहित्य मे रीति का अर्थ है, कवि कर्म की विधि या समग्र काव्य विवेक रीति का समबद्ध जैसे काव्य के अंगों जैसे रस, अलंकार, गुण ध्वनि और नायिका भेद मे है।

(12) रीतिकालिन के दो कवि कौन है?
उत्तर ⇒ (i) भूषण
(ii) सूरदास

(13) रीतिकाल की दो विशेषता बताए ?
उत्तर => (i) श्रृंगार रस की प्रधानता
(ii) अलंकारों का अधिक प्रयोग ।

(14) रीतिकाल का जनक किसे माना जाता है ?
उत्तर => चिंतामणि त्रिपाठी ।

(15) रीतिकाल की काव्य भाषा कौनसी थी ?
उत्तर => ब्रज भाषा ।

(16) रीतिकालिन कवियों का प्रिय छन्द कौनसा था ?
उत्तर => कवित्त और सवैया ।

(17) रीतिकाल को श्रृंगार की संज्ञा देने वाले विद्वान कौन थे ।
उत्तर => विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ।

(18) ~~कवि~~ "कठिन काव्य का प्रेत' किसे माना जाता है ?
उत्तर => केशवदास ।

(19) "मोहि तो मेरे कवित्त बनावत" के कवि कौन है ?
उत्तर => घनानंद ।

(20) किसी कवि ने लक्षण ग्रन्थ नही लिखा ?
उत्तर => कवि घनानंद ।

(21) रीतिकाल के ~~किस~~ की किस कवि मे भक्ति और श्रृंगार का समन्वयात्मक योग है ।
उत्तर => कवि सेनापति ।

(22) रीतिकाल को अलकृंत काल की सज्ञां किसने दी है?
उत्तर => मिश्रबंधु । (2025)

(23) "कुंदन को रंग फिकौ लगे" किसकी पंक्ति है।
उत्तर => मतिराम ।

(24) भूषण किस रस के कवि है?
उत्तर => वीर रस ।

(25) रीतिकाल मे वीर रस के कवियो के नाम लिखिए।
उत्तर => पद्‌माकर, सूदन, खुमान, जोधराज,
भूषण, गुरुगोविन्द सिंह

20-8-25

(26) किस रीतिकाल को वेदान्त मिश्र वादी कहा जाता है।
उत्तर => आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ।

(27) ~~रीतिकाल रीति काव्य~~ रीति काव्य की प्रमुख धाराएँ लिखिए।
उत्तर => (i) रीतिसिद्ध
(ii) रीतिमुक्त
(iii) रीतिबद्ध

(28) रीतिकाल की सामान्य प्रवृतियाँ लिखिए।
उत्तर => (i) शृंगारिकता
(ii) रीतिनिरूपण

(iii) अलंकारिता
(iv) मुक्तक काव्य की प्रधानता

(29) रीतिक रीतिकाल के किस कवि को साक्षात् रसमूर्ति कहां जाता है।
उत्तर => कवि घनानंद को आचार्य रामचंद्र ~~शुक्ल~~ ने शुक्ल ~~जी~~ ने रस मूर्ति कहां है।

(30) रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त में अन्तर बताए।
उत्तर => रीतिबद्ध कवि, रीतिग्रंथों की रचना करते थे, और काव्य के नियमों जैसे - अलंकार, छन्द, रस का पालन करते थे। जबकि रितिमुक्त कवि रीतिग्रंथों से मुक्त होकर अपनी भावनाओ और अनुभवो को स्वछन्द रूप से व्यक्त करते थे।
* इसके प्रमुख कवि => चितांमणि, मतिराम, केशवदास, देवपद्मा आदि।
रीतिमुक्त के => घनानंद, आलम, ठाकुर, बोधा आदि।

(31) रीतिसिद्ध काव्य धारा समझाए।
उत्तर => रीतिसिद्ध कवि काव्य शास्त्र आधारित काव्यांग विवेचन नही करते।
वह नायक, नायिका, रस, छन्द, अलंकार, गुण, दोष, के लक्षण विवेचन नही करते बल्कि वह ~~सिध~~ सीधे काव्यांगो के सरस उदाहरण प्रस्तुत करते है।
प्रमुख कवि => बिहारी।
वृदं, कृष्ण कवि, रस निधि, सेनापति आदि।

(32) रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियां लिखिए।
उत्तर ⇒ लक्षण ग्रंथो का निर्माण, श्रृंगार रस की प्रधानता, वीर और भक्ति काव्य, ~~रीति~~ नीति काव्य, प्रकृति चित्रण, ~~ब्र~~ ब्रज भाषा का उत्कर्ष, काव्य रूप मे मुक्तक काव्य।

(33) "आगे के कवि रीझि है....
तो कविताई किस कवि की पंक्ति है।
उत्तर ⇒ बिहारी

(34) रीति सम्प्रदाय का ~~प्रर्वतक~~ प्रवर्तक आचार्य किसे माना जाता है।
उत्तर ⇒ आचार्य वामन।

(35) रीतिकाल के किस कवि ने 104 अलंकारो का निरूपण किया है।
उत्तर ⇒ रीतिकाल के कवि भूषण ने अपने ग्रंथ शिवराज भूषण मे 104 अलंकारो का निरूपण किया।

(36) 'नेवाज' किस राजा के दरबारी कवि थे।
उत्तर ⇒ महाराज छत्रसाल।

(37) छत्रसाल दसक किस कवि की रचना है।
उत्तर ⇒ कवि भूषण।

(38) 'याकूब' खा किस काल के कवि है।
उत्तर ⇒ रीतिकाल।

(39) रीतिकालीन अति श्रृंगारिकता के ... है। की कविता जीवन का जय कोश घोष है।

उत्तर => भूषण।

(40) रीतिबद्ध और रीतिमुक्त श्रृंगारि काव्य है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर => रीतिबद्ध कवि नियमों से बंधे हुए होते है। रीतिमुक्त कवि नियमों से मुक्त होते है। रीतिबद्ध काव्य शास्त्रों के नियमों का वर्णन करते है। रीतिमुक्त शास्त्रीय नियमों का वर्णन करते है। इसलिए इसे श्रृंगारिकता का आधार दिया है।

26-08-2025

निबंधनात्मक प्रश्न

(1) रीतिकाल की सामान्य विशेषताएँ, प्रवृ प्रवृत्तियाँ, लिखिए।

उत्तर => रीतिकाल की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक पृष्ठ भूमि का अध्ययन करने पर सामान्य विशेषता इस प्रकार है।

(i) सामन्ती अभिरुचि => यह काल सामन्ती अभिरुचि का काल रहा है।

इस काल का समस्त साहित्य आश्चर्य दाताओं की रुचि के अनकुल रचा गया है। भू तो हर यहाँ मे प्रेम, श्रृंगार की प्रधानता

है।

शुक्ल जी के अनुसार — — — —

तुलसीदास सीता के प्रति राम का प्रेम राम को कर्तव्य मार्ग में आगे बढ़ाता है। जबकि रीतिकालीन कवि का नायक अंतःपुर में ही संयोग तथा वियोग की सारी दशाओं को अनुभव किया है। वास्तव में उनके प्रेम के पीछे विनाश की इच्छा अधिक है, प्रेम का भाव कम उनका प्रेम सामान्य जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं रखता है। उनके प्रेम की मुख्य प्रेरणा परकिया नायिका है, अपनी पत्नी नहीं।

(ii) आचार्यतत्त्व प्रदर्शन की प्रवृत्ति ⇒

इस युग के प्रायः सभी कवियों ने आचार्य बनने का प्रयत्न किया है। और इस अलंकार आदि काव्यांगों पर ग्रंथ रचना की इन रचनाओं में मौलिकता का सर्वथा अभाव रहता था उन्होंने मौलिकता, केवल नए भेदों के नामकरण में ही दिखाई है।

जैसे केशवदास ने श्रृंगार के प्रच्छन्न और प्रकाश नामक दो भेद किये तथा काव्य शास्त्र इस आवरण का मुख्य विषय नहीं।

(iii) श्रृंगारिकता प्रवृत्ति ⇒

रीतिकालीन साहित्य में श्रृंगार की प्रधानता है, श्रृंगार के भावों ने उस काल के धार्मिक साहित्य तक को प्रभावित किया

कृष्ण भक्ति के इस साहित्य में माधुर्य भावना का बहुत प्रचार हुआ है। और कृष्ण भक्ति के नाम पर घोर शृंगारी काव्य की रचना हुई है। राम भक्ति का मार्ग था उसमें प्रेम लिलाओं के लिए स्थान नही था। किन्तु इस ~~युग में राम~~ युग में मे राम भक्ति में भी आचार्य माधुर्य भाव ~~प्रवशे~~ प्रवेश हुआ और कृष्ण के समान राम की भी प्रेम की लीलाओं का वर्णन किया जाने लगा किन्तु यह बहुत कम था।

(iv) नारी सौन्दर्य चित्रण ⇒ शृंगार कालीन काव्य में नारी के रूप चित्रण को बहुत महत्व दिया गया है।

डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है, कि शृंगार कालीन काव्य में नारी व्यक्ति या समाज में संगठन की ईकाइ नही है। बल्कि सब प्रकार की मर्यादाओं यथा के बंधन से यथासम्भव ~~मुक्त~~ विलास का एक उपकरण मात्र है। देव ने कहा है।

"कौन गनै पुरवन नगर कामिनि स्वकै रीति।
देखत हरै विवेक की चित्त हरै करि प्रीति।।

इससे इतना स्पष्ट है कि नारी की विशेषता इनकी दृष्टि में कुछ नही है, यह पुरुष के आकर्षण का वर केन्द्र है। शृंगार काल में नायिका भेद निरूपण में भी

कवि रूपमति नायिका का वर्णन करता है।

"मानो रची छवि मूरति मोहनी
श्री घर ऐसी बखानत नायिका ।।

श्रृंगार काल में रूपमती नारी विलास का साधन है। जीवन का एक विश्राम स्थल है, जहाँ सभी प्रकार की दौड़ धूप से श्रान्त हो पुरुष नारी के मधुर अंचल छाया में बैठकर अपने दुखो एवं प्रभवो को भूल जाता है। श्रृंगार कालीन कवि नारी के सामाजिक मूर्त लक्ष्मी एवं मात्र रूप का निरीक्षण नही कर सका। वह तो परिक्रिया नायिका के वर्णन में भी अधिक अनुराग प्रदर्शित करता रहा।

"चमक तमक हासी ससक, लपक झपक लपटानि।
ऐजाहि रति, सो रति मुकति और मुकति अति हानि।।

(v) श्रृंगार के विभिन्न रूपों का निरूपण =)

युग के नैतिक आदर्शों की अनुमति होने के कारण श्रृंगार काल ने काम प्रवृति कि अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण स्वछन्दता की आध्यात्मिक आवरण में ही श्रृंगारिक कविता नही होती। वर्ण स्वतंत्र रूप में भी होती है।

कवि लोक राजाओ की तृषित प्रवृतियो को सन्तुष्ट नग्न श्रृंगार का चित्रण करते रहे थे। निर्बाध वासना तृप्ति का एक

इस परिणाम भी हुआ काम जीवन का तत्व न रहकर बहि रंग साध्य बन गया। इसलिए इस काल के रितिबद्ध कविता की शृंगारिकता में प्रेम की एक निष्ठता न होकर वासना की झलक मिलती है। और उसमें भी सूक्ष्म आंतरिकता की अपेक्षा स्थूल का प्राधान्य है, रितिबद्ध प्रतिनिधि कवि मतिराम, बिहारी, देव आदि रसिक थे प्रेमी नहीं।

=) इन्होंने बाहर स्थूल की सौन्दर्य की अभिव्यक्ति की है, उनके काव्य में सूक्ष्म सौन्दर्य का और आत्मा के शाश्विक सौन्दर्य का वहाँ इन कवियों की पहुंच गहरी थी। उदाहरण के लिए नयनों के कटाक्षों और अंचलों के विद्यापति को छोड़कर प्राचीन साहित्य में दुर्लभ है -

जैसे -> " पैर जहाँ ही जहाँ वह बाल, तहाँ तहां ताल मे होत त्रिवेनी। (पद्माकर)

(vi) भक्ति एवं वैराग्य का मिश्रण =) रीतिकाव्य में शृंगार के विसद विवेचन के साथ-2 भक्ति और वैराग्य सम्बधी भावनाएं अभिव्यक्त हुई है। वस्तुत: भक्ति सम्बन्धी रचनाएँ तो केवल परम्पराओं का निर्वाह करने के लिए प्रस्तुत की गई है। भक्ति का जो स्वरूप हमें भक्तिकाल के जो संत कवियों में देखने को मिलता है फिर भी कभी-2 ये कविगण ईश्वर का स्मरण कर लिया करते थे।

मेरी भव बाधा हरो राधा नागरी सोई
जा तन की झाई परे, स्याम हरित दुति होई।

वास्तव मे अति प्रिय शृंगारिकता एवं लिपट कवियों के लिए भक्तिभावना जीवन को शाश्वत करने का एक सम्भल, एक मनोवैज्ञानिक की आवश्यकता थी। इसलिए अवसर आने पर वह हरि या राधा को याद कर लिया करते थे।

(vii) प्रकृति का उद्दिपन रूप मे चित्रण ⇒ रीतिकाल को यद्यपि हम प्रकृति कि विशाल चित्रशाला कह सकते है जिसमे प्रकृति अपने विविध रूपों मे चित्रित की गई है। किन्तु प्रकृति की स्वतंत्र चेतन संस्था का आभास हमे रीतिबद्ध कवियों के काव्य मे नही होता। शृंगार प्रधान काव्य होने के कारण इस युग को रूप हि अधिक चित्रण किया है।
→ यो तो रिति काव्य कारो ने बारह मासा ऋतु वर्णन आदि को विस्तार दिया है। कुछ ने तो इन पर स्वतंत्र ग्रंथो की रचना भी कि है। स्वतंत्र प्रकृति को प्रस्तुत किया गया है। नायिका को रिझाने उसके हाव-भाव को प्रस्तुत को करने तथा प्रकृति के स्वरूप को महत्व दिया है।

1-9-2025

Ajaya
DATE ~~29~~ 8 / 25
PAGE NO.: 13

(8) आश्रयदाताओ की प्रशंसा =>

राजा श्रेय की छाया मे काव्य सर्जना करने वाले ये कवि अपने आश्रय दाता कि जितनी अधिक अतिश्योक्ति पूर्ण प्रशंसा करते थे। उन्हे उतना ही सम्मान प्राप्त होता था। इसी कारण उन्होंने आश्रय दाताओ की प्रशंसा करने के धर्म का भी निर्वाह किया है। कुछ कवियो ने तो आश्रय दाताओ के नाम पर हि ~~अप~~ अपने काव्य ग्रंथो का नामकरण कर दिया। और कुछ कवियो

-> अपने आश्रय दाताओ को भी खरी खोटी सुनाने का साहस बहुत कम कवि जुटा पाये है। अधिकांश ने तो अपनी कला को सामन्ती दरबारो मे बेचा हि है। उसमे धन और यश दोनो प्राप्त किये है। जीवन यापन कि विवशता ने इन कवियो को अतिश्योक्ति पूर्ण प्रशंसा के लिए विवश किया।

(9) मुक्तक शैली का प्रयोग =>

रीतिकाल मे अधपि प्रबन्ध काल कि रचना हुई।

भक्ति युग मे हि राज दरबार मे मुक्तक शैली को पर्याप्त प्रोसाहन प्राप्त हुआ। अकबर के कवि रहिम, गंग आदि श्रृंगारी कवियो के बहुत पहले कवित्त सवैया

आदि कि रचना कर चुके। इसलिए इसके अतिरिक्त
राज दरबार री मुक्तक परम्परा को रिति युग कवियो ने अपना लिया और मुख्यतः सवैया और दोहा छन्दो की व्याख्या की घनानन्द देव, पद्माकर आदि छन्दो मे अपनी शैली से परिछद हुए।

⑩ **ब्रज भाषा का प्रयोग** ⇒

भक्तिकाल मे ही काव्य की प्रमुख भाषा ब्रज रही है। अवधि का भी प्रयोग होता रहा। लेकिन कृष्णभक्त कवियो ने ब्रज भाषा को कोज रखा। अवधि भाषा से ब्रज भाषा को अधिक संपोग दिया है।
रीतिकाल का 90% से अधिक काव्य ब्रज भाषा मे रचा है। मन्धुरता ब्रज भाषा की प्रकृति है। श्रृंगार के वर्णन के लिए कोमल कान्त पदावली की आवश्यकता होती है।
→ इस भाषा को मधुर रोचित बनाने के लिए संयुक्त वर्णो का सरलीकरण किया गया है।

कला प्रियता, सौन्दर्य प्रियता, आचार्य की स्पृहा आरंभ आश्रय दाताओ के मनो अनुकूल पर्याप्त मानने की प्रवृति के बावजूद रीति कवियो का योगदान अस्मरणीय रहा है।

3-9-2025

② रीति काल की सामान्य प्रवृतियां एवं परिस्थितियां लिखिए ?

उत्तर => रीतिकाल की अवधि संवत् 1700 - 1900 तक मानी जाती है। इस सामाहिक हिन्दी काव्य को पूरी तरह प्रभावित किया है। इन परिस्थितियों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार दिया जाता है।

(i) राजनैतिक परिस्थितियां =>

मध्य युग सामंत वाद का चरमोत्कर्ष काल शौर्य चमत्कार वैभव प्रदर्शन और विलास थे सामन्त विशेषताएँ समस्त राजकीय वातावरण को अभिभूत किये हुए थी। कतिपय अपवादों को छोड़कर युद्ध का वातावरण लगभग समाप्त हो चुका था। मुगल बादशाहों के अधिन राज दरबारों में भी विलाश एवं चमत्कार प्रदर्शन की धारा बह रही थी। कवि भी राज दरबारों में अपने पाण्डित्य प्रदर्शन के बल पर राजाओं का मनोरंजन कर अपना अस्तित्व कायम किये हुए है।

(ii) सामाजिक परिस्थितियां =>

रीतिकाल का समाज स्थूल रूप से शासक और शासित दो वर्गों में विभाजित था इन्हें क्रमशः भोक्ता और उत्पादक वर्ग भी कह सकते है। प्रथम वर्ग राज्य की शक्ति था। इसमें सम्राट के परिजन नौकर, चाकर, दरबारी लोग, दास आदि आते थे। दूसरे वर्ग में कृषक समुदाय और श्रम जीवी थे। प्रथम शोषक था, और दूसरा शोषित दोनों वर्गों के मध्य आकाश

पाताल का अन्तर था। एक सम्पन्न था, दूसरा विपिन नागरिक जीवन समर्थ था। ग्रामीण जीवन एक दम निर्धन गोस्वामी जी ने कविता कली मे इस स्थिति का वर्णन बहुत अच्छी तरह किया है।

"वनिक को न बनिज
न चाकर को चाकरी"

शिक्षा की सम्यक व्यवस्था नही थी इसलिए समाज मे अन्धविश्वास और रूढीवादी की प्रबलता थी।

(iii) धार्मिक परिस्थितियाँ =>

मॉं प्रभु महा प्रभु वल्लभाचार्य जी के पुष्टि मार्ग तथा निम्बार्काचार्य की रामानुज भक्ति के प्रभावस्वरूप धर्म के क्षेत्र मे वैराग्य भावना मे बहुत कुछ कमी आ गयी थी और धर्म का बाह्य पक्ष पर्याप्त प्रबल हो गया था।

डॉ. नगेन्द्र के शब्दो मे "धर्म का तात्विक विकास रुक गया था, और उसके स्थान पर भक्ति के बाह्य विलास अत्यन्त समर्थ हो गये थे।

(iv) सांस्कृतिक परिस्थितियाँ =>

इस युग कि सामन्ती व्यवस्था के अंतर्गत नारी जीवन की सार्थकता पुरुष को ~~आकर्षित करके~~ आकर्षित करके उसकी विलास पीडा का साधन बनने एवं उसके द्वारा भोग किए जाने मे मानी जाने लगी।

इस प्रकार शासक वर्ग एवं समाज कि प्रवृति के रूप मे जो शृंगार भावना उभरी वह तत्कालीन धर्म साधना का आश्रय मिल जाने के कारण सम सामाजिक समाज की एक प्रमुख व्यापक प्रवृति बन गई। जो-जो विलाश के साधन बढते गये त्यो-२ समाज का मानस का विकृत होता गया। इन परिस्थितियो का आवश्यक विलाश। नैतिक पतक था। बेईमानी और रिश्वत का बाजार गर्म था। भाग्यवाद एवं नैराश्य का सामराज्य था। पूरे समाज का बौद्धिक ह्रास होने लगा था। मौलिक प्रतिभा कुण्ठित हो गई थी। केवल विलाश की रमणियता शेष रह गई थी।

(v) <u>काव्य</u> <u>कला</u> <u>पर</u> <u>परिस्थितियो</u> <u>का</u> <u>प्रभाव</u> =>

मुगल दरबारो मे फारसी कला तथा काव्य परम्पराओ को प्रश्रय मिला। राजस्थान के नरेशो और सामन्तो की छत्र छाया मे हिन्दी कविता का दरबारी रूप सामने आया। ओरछा, कोटा, बूंदी, जोधपुर, जयपुर और महाराष्ट्र के राज - दरबारो मे भी प्रदर्शन प्रधान शृंगार पूर्ण जीवन दर्शन की अभिव्यक्ति करने वाली काव्य धारा चलती रही। सामन्त चित्र कला, संगीत कला, काव्य कला प्रत्येक की प्रवृति मौलिक उद्भावना कि ओर न होकर अलंकरण और रसीलेपन की ओर हो गई थी।

<u>निष्कर्ष</u> => सारांश यही कहा जा सकता है कि यह अवधि पाण्डित्य पाण्डित्य के निखार की प्रवृति प्रमुख थी। इसके साथ ही फारसी साहित्य की

गोष्ठी एवं चटक, अन्दाजे ~~बयां~~ बयां ने भी हमारे काव्य को प्रभावित किया।

प्रश्न (3) रीतिकाल की प्रमुख धाराएँ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर => रीतिकाल की प्रमुख: तीन

(i) रीतिबद्ध काव्य
(ii) रीतिसिद्ध काव्य
(iii) रीतिमुक्त काव्य

=> हिन्दी साहित्य में उत्तर मध्य काल को रीतिकाल की संज्ञा दि है। रीतिकालीन साहित्य पर संस्कृत की काव्य शास्त्रीय परम्परा का गहरा असर है। संस्कृत साहित्यक शास्त्र के पाँच सम्प्रदाय (रस, अलंकार, रीति, वक्रोक्ति, वक्रोकति, ध्वनि) में से अलंकार, रस व ध्वनि के लक्षण व उदा. ज्यादा देखने को मिलते है। रस के अंतर्गत नायिका भेद व शृंगार में रस से सम्बंधित ग्रंथो की संख्या सर्वाधिक है। हिन्दी में लक्षण ग्रंथो की रचना करने वाले विद्यमान संस्कृत साहित्यक के मर्मज्ञ नही थे। हिन्दी में लक्षण ग्रंथो की परिपाटी पर रचना करने वाले जो सैकडो कवि हुए है। वह आचार्य की कोटी में नही आ सकते। वह वास्तव में कवि नही थे। वैसे भी दरबारी परिवेश से कोसित होने के कारण राजाओ का गुणगान करते थे। संस्कृत काव्य शास्त्र की परम्परा को हिन्दी में जो लाए उनका नाम आचार्य केशव है।

हिन्दी में रीतिग्रंथों की अविरल और अखण्डित प्रवाह केशव कि कवि प्रिया के 50 वर्ष पीछे चला और वह भी भिन्न आदर्श लेकर।

=> काव्य रिति, रस रिति, अलंकार रिति आदि का प्रयोग इस काल के कवियों ने स्वयं किया। दास ने लिखा है, काव्य की रिति सिखी सुखवीन सों देखी सुनी वहु लोग की बातें चिंतामणि, देव, प्रताप शाही, सुंदर आदि रीति सुभाषा कवित्व की कवि रीति का प्रयोग किया है।

(ii) **रीतिमुक्त कवि** => रीति काव्य की एक दूसरी धारा रीतिमुक्त कवियों कि है। इसे 'स्वछन्द काव्यधारा' भी कहा जाता है। इस वर्ग के प्रमुख कवियो मे घनानन्द, बोधा, ठाकुर, आलम आदि विशिष्ट रहे है। ये वे कवि है, जिन्होंने प्रयत्न करके कविता नही लिखी है, अपितु कविता तो स्वयं इनके हृदय से प्रस्फुरित होकर मुक्त कण्ठ से प्रवाहित हुई है। रीतिबद्ध कवियों ने चमत्कार की अभिव्यक्ति के लिये बुद्धि प्रेरित कविताऐं लिखी, जबकि रीतिमुक्त कवियो ने भाव भावित कविता लिखी, जिसका प्रमाण समुचा रीति काव्य है। रीतिमुक्त कवियों ने काव्य को साधन रूप मे नही बल्कि साध्य रूप मे ग्रहण किया है। घनानन्द ने कहा है -

'**लोग है लागि कवित्त, बनावत मोहि तो मेरे कवित्त बनावत**'।

प्रस्तुत पंक्ति केवल घनानन्द पर ही चरितार्थ नही होती, अपितु समुचे रीतिमुक्त काव्य पर लागू है। घनानन्द की कविता मे संकलनकर्ता बृजनाथ ने भी इसी दृष्टिकोण से अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा 'जग की कविताई के धोखे रहै। प्रवीनन की मति जाती जकी'। अर्थात रीतिमुक्त कवियों की कविता को नेत्रों मे नही बल्कि हृदय की आंखों मे पढ़ा जाना चाहिये।

10-9-2025

DATE / /
PAGE NO.: 20

रीतिकालीन कविगणो की काव्यधाराएँ

(i) **रीतिबद्ध कवि** => रीतिबद्ध एक काव्य धारा है, जिसका श्री गणेश भक्तिकाल मे ही हो चुका था। जिनमे आचार्य केशव का नाम सम्माननीय और अग्रगण्य है। रीतिबद्ध कवियो को मुख्य रूप से तीन वर्गो मे रखा गया है - अलंकार निरूपक आचार्य और सर्वांग निरूपक आचार्य ने सभी विषयो पर अपना ध्यान आकर्षित किया - आचार्य चिंतामणि कुलपति मिश्र, देव, सूरति मिश्र, सोमनाथ, श्रीपति, भिखारीदास प्रतापसिंह आदि आचार्य इस क्षेत्र के प्रमुख थे। अलंकार निरूपक आचार्यो ने अपने लक्षण ग्रन्थो के निर्माण के लिये चन्द्रलोक, कुवलयानन्द आदि पूर्ववर्ती ह्रासोन्मुख ग्रन्थो को ही आधार बनाया था। इन आचार्यो मे केशव, जसवंत सिंह, मतिराम, भूषण, गोप, रसिक, गोविन्द, गोकुलनाथ और पद्माकर के नाम लिखे जा सकते है। रस और नायिका भेद के निरूपक आचार्यो की दो कोटियाँ है - कतिपय आचार्यो ने मूल रूप मे नायिका भेद और स्थूल रूप से श्रृंगार रस का निरूपण किया है। कुछ आचार्य ऐसे भी रहे जिन्होने सभी रसों पर विचार किया। किन्तु सभी की दृष्टि श्रृंगार रस की ओर अधिक केन्द्रित रही। इस वर्ग के आचार्यो मे तोष कवि, मतिराम, देव, कालिदास कृष्ण भट्ट, श्रीपति, उद्‌धनाथ, सोमनाथ, रसलीन, भिखारीदास उजियारे, रामसिंह, गोबिन्द, बेनी और पद्माकर आदि प्रमुख थे।

देव द्वारा किया गया रस-विवेचन अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत और मौलिक है। मतिराम पद्माकर आदि के लक्षण उदाहरण न केवल सटीक है अपितु ~~सरसा~~ सरस भी है। रीतिकाल की रसिकता और सरसता के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत करने वाले ये ही कवि है। रीति ग्रन्थो के ~~प्रस्तुत करने~~ प्रस्तुत करने वाले प्रस्तोता आचार्य केशव ही माने जाते है।

कविप्रिया और 'रसिकप्रिया' दोनों ही उत्तम कोटि के ग्रन्थ माने गये है। रीतिकाल के जसवंत सिंह ने भाषा भूषण की रचना कर अपने आचार्यत्व का साक्षात्कार कराया है। भूषण का 'शिव भूषण' ग्रन्थ एक अलंकार निरूपक ग्रन्थ है। मतिराम का कवि रूप आचार्य की तुलना मे कहीं अधिक प्रबल है। आचार्य देव का आचार्य और कवि रूप दोनो का ही समान रूप से अपना महत्त्वपूर्ण परिचय देता है। देव के सृजन मे काव्यत्व के साथ - साथ एक श्रेष्ठ आचार्य तुल्य मौलिक चिन्तन भी स्वतः समाविष्ट हो गया है। भावों की सूक्ष्मता, भाषा पर असाधारण ~~अधिकार~~ अधिकार शब्दो की सगोत्रता, सरसता और इसके साथ - २ उक्ति वैचित्र्य देव ने पूरा ध्यान आकर्षित किया है। शृंगार कालीन आचार्यों मे भिखारीदास ने लक्षण उदाहरण प्रस्तुत किये है। रीतिबद्ध कवियो ने लक्षण ग्रंथों के आधार पर व्रत मे काव्य रचना की इन्हे हम आचार्य वादी कह सकते है।

11-9-2025

इकाई - II

अध्याय => 1 केशवदास

अतिलघुरात्मक प्रश्न

(1) केशवदास किसके दरबार मे रहते थे?
उत्तर => 'ओरछा' नरेश इन्द्रजीतसिंह।

(2) रीतिग्रंथ का प्रवर्त्तक किसे कहा गया।
उत्तर => केशवदास।

(3) किस आलोचक ने कवि केशव को रितिकाल का प्रवर्त्तक माना है?
उत्तर => डॉ. नगेन्द्र।

(4) केशव को कठिन काव्य का प्रेत किसे कहा है? (2023)
उत्तर => सर्वप्रथम => 'देव' ने।
अन्य => आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

(5) किस विद्वान ने केशव कि रचना रामचन्द्रिका को छंदों का 'अजायबघर' कहा है।
उत्तर => रामस्वरूप चतुर्वेदी।

(6) कवि केशवदास की भाषा का मिल्टन किसने कहा।
उत्तर => मिश्रबंधु।

(7) केशवदास की रचना कवि प्रिया मे कुल कितने प्रभाव (अध्याय) है?
उत्तर => प्रभाव => 16 सर्ग => 16।

(8) केशव के काव्य में किस ~~का~~ कला कि विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा कि है?

उत्तर => संवाद योजना।

(9) रामचन्द्रिका मे कितने संवाद है?

उत्तर => रामचन्द्रिका मे कुल मिलाकर 9 संवाद है। जिसमे मे कुछ विशेष का उल्लेख है।

(i) सुमति - विमति संवाद
(ii) रावण - बाणासुर संवाद
(iii) राम - परशुराम संवाद

(10) कवि केशव का आध्यात्मिक ग्रंथ है?

उत्तर => विज्ञान → गीता → (1610)

(11) रामचन्द्रिका का मुल आधार ग्रंथ क्या है?

उत्तर => केशवदास द्वारा रचित लिखित परम्परा का महाकाव्य।

(12) अंगद - रावण संवाद का अर्थ क्या है?

उत्तर => युद्ध से पहले राम के दूत अंगद रावण को राम की शरण मे आने की चेतावनी देने जाते है।

(13) केशवदास जी का अलंकार ग्रंथ कौनसा है?

उत्तर => कविप्रिया।

(14) केशव~~दास~~ की काव्य कला नामक आलोचना किसने लिखी है?

उत्तर => कृष्ण शंकर शुक्ल।

(15) रामचन्द्रिका की भाषा क्या है ?

उत्तर => रामचन्द्रिका की भाषा संस्कृत ~~प्रयास~~ प्रधान बुन्देल खड़ी ब्रज भाषा है। जिसमे अवधि संस्कृत और कुछ विदेशी भाषाओं के शब्द मिलते है।

(16) किस विद्वान ने केशव दास को 'क्लासीकल' कहाँ था।

उत्तर => डॉ. बच्चनसिंह।

(17) प्रसिद्ध काव्य रामचन्द्रिका कि रचना कब हुई।

उत्तर => 1601 ईश्वी. मे केशवदास द्वारा।

(18) केशव दास किस सम्प्रदाय से विकसित थे।

उत्तर => निम्बार्क सम्प्रदाय।

(19) केशव कि रचनाऍ किस काव्य धारा से सम्बन्ध रखती है।

उत्तर => रीतिबद्ध।

(20) किस रीतिकाल को वेदान्तवादी मिश्र कहाँ जाता है।

उत्तर => केशवदास को।

(21) केशवदास का जन्म व मृत्यु लिखिए।

उत्तर => * जन्म => 1555 ईश्वी. (ओरछा मे)
* मृत्यु => 1617 ईश्वी..

* छंदो के लक्षण व उदाहरण => 77

12-9-2025

अवतरण - 1

कौन हो रावण कौन हो ~~पसम~~ पठए सौ ---------।
लोक लाज ज्यों रह अती जानये ---------॥

<u>प्रसंग</u> => प्रस्तुत संवाद केशव की रामचन्द्रिका से लंका काण्ड के अंगद संवाद से लिया गया है। इसमे कवि ने रावण के द्वारा अंगद के द्वारा परिचय पूछो जाने का वर्णन किया है।

<u>व्याख्या</u> =>
कवि केशव कहते है कि जिस समय अंगद के रावण के दरबार मे प्रवेश कर सभा मे आकर अपना पैर जमा लेता है। उसी समय रावण अंगद से पूछता है। तुम कौन हो ? किसने तुम्हे यहाँ भेजा है। और तुम्हे क्या काम है ? उसी समय अंगद रावण के प्रश्न का उत्तर देते हुए बोला कि मेरा नाम अंगद है और मै वानर जाति से हूँ, लंका नायक का दूत है, फिर रावण अंहकारी स्वर मे बोलता ~~है~~ है। कि ~~फिर~~ ~~सबम~~ वह कौन था। जिसको हमने बाध लिया था। और जिसकी पूँछ मे आग लगा दी थी। तो अंगद रावण का घमण्ड तोड़ते हुए कहता है। कि हे रावण जिसके बारे मे तुम ~~पूछा~~ पूछ रहे हो ये ~~वानर~~ वानर जाति का ही एक दूत है। जिसका नाम हनुमान है और वह श्रीराम का सेवक है, और तुम्हारी जानकारी के लिए बता दूँ रावण उसी हनुमान ने जली हुई पूछ के द्वारा तुम्हारी पूरी लंका को

जला दिया और जो अक्षय तुम्हारा प्रिय पुत्र था। उसको वध कर दिया तो यह बात किसी ने गलत कही है जिसके बारे में आप मुझसे पूछ रहे हो।

अवतरण - II

रावण => कौन के सुत ? बालि के वह कौन ------।
कहा वह वीर अंगद देवलोक ------।।

12/9/25

प्रसंग => प्रस्तुत संवाद केशव के रामचन्द्रिका से लंका काण्ड के अंगद रावण संवाद से लिया गया है। इसमें रावण अभिमान करते हुए बालि को न पहचानने की बात कह रहा है।

व्याख्या => कवि कहता है कि जैसे ही अंगद रावण के दरबार में पहुँचता है। रावण गरजते हुए अभिमान में अंगद से बोला किस के पुत्र हो ? अंगद बालि का पुत्र हूँ, रावण वह कौन बालि मैं नही जानता अंगद रावण का घमण्ड तोड़ते हुए याद दिलाता है। और कहता है कि वही बालि जो तुम्हें कांख में दबाकर घसीटते हुए सात समुद्र पर ले गया था रावण कहता है हां याद है, आज कल वह वीर कहां है ? वीर अंगद बोलते हैं कि वह तो देवलोक सीधार गये। रावण बोला देवलोक

15-9-2025

क्यो ? पुन: अंगद बोला श्रीराम के बावरूपी विमान पर बैठकर स्वर्ग को सिधार गये ?

अत: रावण अपने पूर्व की कमजोरी सुनते हुए लज्जित होता है। पर घमण्ड के कारण सिर को ऊँचा करके ही बात करता है।

Q. (1) केशवदास की काव्यकला को उदाहरण सहित स्पष्ट किजिए। (2025) (Most)

Q. (2) "रामचंद्रिका काव्य में केशव की समुद्र संवाद योजना आदित्य है।" इस कथन के आलोक में रामचन्द्रिका के संवाद - सौष्ठव का विवेचन कीजिए। (2018) Most

(3) केशव कठिन काव्य के प्रेत है। घटित संवाद के आधार पर सिद्ध कीजिए। (2016)

(4) केशव की के काव्य की विशेषताओ पर प्रकाश डालिए। (2017)

(5) केशव की काव्य कला शीर्षक देकर समीक्षात्मक निबंध लिखिए। (2019)

Q (1) केशवदास के काव्य काल का शीर्षक देकर समीक्षात्मक निबंध लिखिए।

उत्तर => कवि परिचय =>

केशवदास का जन्म 1555 ई. मे ओरछा नगर मे हुआ था। वह ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम काशीनाथ था। केशवदास रीतिकाल के कवि माने जाने जाते है। ओरछा पति नरेश इन्द्रजित के दरबारी कवि के गुरु थे। व संस्कृत काव्य शास्त्र का समर्थक परिचय कार्य कराने वाले समर्थक परिचय कार्य कराने वाले हिन्दी के प्राचीन आचार्य व कवि है।
कवि प्रवर्तक आचार्य होने के कारण केशवदास का लक्ष्य ब्रज भाषा मे अपने संस्कृत का ज्ञान उद्‌घाटन कर प्राचीन काव्य का अनुसरण करना था। इन्हे विह सिंह देव का भी आशर्य मिला केशव दास साहित्य संगीत ज्योतिस, धर्म शास्त्र एवं वैदिक विषय के आचार्य रहे है।

☆ काव्य भाषा =>

संस्कृत बुंदेल खण्डि ब्रज भाषा, मुहावरेदार भाषा आदि इनकी काव्य भाषा रही है।

☆ केशवदास की प्रमुख रचनाऐं :-> रसिक प्रिया, कवि प्रिया, नखशिख, रामचन्द्रिका पुष्प, माला वीर सिंह देव चरित्र, रतन बावनी, विज्ञान गीता, जहांगीर जस चंद्रिका।

(1) रसिक प्रिया => यह एक मुक्तक काव्य ग्रंथ है केशव की प्रौढ़ रचना है। जो

काव्य शास्त्र से सम्बंधित ग्रंथ है। इसमें नौ रसो व काव्य दोषो के लक्षण है इसके मुख्य आधार नाटक शास्त्र काम शत्रु, रुद्र भट्ट श्रृंगार तिलक आदि।

(2) <u>कवि प्रिया</u> => यह मुक्तक काव्य ग्रंथ है, जो काव्य शिक्षा से सम्बन्धित है। इसमें इन्द्र जीत की गद्दीका व केशवदास की शिष्या प्रवीण राय के लिए प्रस्तुत किया गया है।

(3) <u>रामचन्द्रिका</u> => केशव का सर्वाधिक प्रसिद्ध महाकाव्य रामचन्द्रिका है, जिसमें प्रसन्न राघव, हनुमत नाटक, कादम्बरि आदि रचनाओं से संकलित महा काव्य है।

(4) <u>विज्ञानगीता</u> => प्रबोध चन्द्र बोद्य के आधार पर रचित विज्ञान गीता उपदेशित काव्य है।

★ केशवदास की काव्यगत विशेषताएँ -

कला पक्ष

भाषा, छंद, शैली
अलंकार।

भाव पक्ष
प्राकृतिक चित्रण, उद्दिपन
के रूप में चित्रण.

सामन्ती अभिरुचि
शृंगारिक प्रकृति
भक्ति व वैराग्य
आश्रयदाताओं की प्रसन्नता

★ कला पक्ष :->

(1) भाषा => केशवदास ने अपने काव्य को ब्रज भाषा मे लिखा परन्तु जो स्वरूप सूरदास व अष्टछाप के कवियों मे मिलता है, वह केशव की कविता मे नही। केशव उनकी भाषा संस्कृत से लोग अत्यधिक प्रभावित है। केशव संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित थे। केशव की भाषा मे बुंदेल खंडी भाषा का भी मिश्रण मिलता है जैसे - खारस (छुयारा) गोरमदापन (इन्द्रधनुष) थोरीला (खुटी) जैसी बुंदेली शब्दो का प्रयोग किया गया है। केशवदास ने कही-कही तो शब्दो को गढ लिया है। केशवदास की सामान्य रूप से अपेक्षाकृत सुगम है। केशव ने मुहावरो व कहावतो का भी प्रयोग किया है।

(2) छंद => केशवदास जी छंद शास्त्रीय थे। उन्होने हिन्दी साहित्य मे इतना छंद का प्रयोग किया है, उतना किसी कवि ने नही किया। इनकी रचना छन्द माला मे छन्दो का वर्णन किया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार रामचन्द्रिका मे छंदो की विधानता इतनी है कि उन्होने इसे छंदो का अजायबघर कहा है।

केशव जी की छन्द योजना संस्कृत साहित्य की छंद योजना है। केशव के कवित्त छंद सवैया छंद, दोहा छंद, सोरठा छंद आदि छंदों का सफलतापूर्वक वर्णन किया है। केशव ने मात्रिक छन्द का भी ~~वर्णन~~ प्रयोग किया है।

16-9-25

(iii) रस विवेचन => आचार्य कवि केशवदास जी ने अपने काव्य में अनेक स्थानों पर पर विविध रसों की उत्कृष्ट व्यंजना की है। यह शृंगार व रस के कवि है, इन्होंने शृंगार रस में वियोग शृंगार रस का सबसे अधिक प्रयोग किया है।

(iv) अलंकार => केशवदास को अलंकारों से विशेष मोह था। उनके अनुसार
"जदपि सुजाति सुलच्छनी, सुबरन सुवृत्त।
भूषण बिन न विराजई, कविता बनिता मित्र ॥

केशवदास ने काव्यगत दोष ~~प्रसिद्ध~~ प्रसिद्धि का निरूपण किया है। उन्होंने काव्य में अलंकारों ने महत्त्व को माना है। केशव ने कुछ अलंकारो को विशिष्ट माना है। जैसे - उपमा, रूपक, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, हेतु विशेष है।

जहाँ अलंकार योजना की वृद्धि केशव का कठोर आग्रह नहीं है। वहाँ उनकी कविता अत्यन्त हृदय ग्राही है।

(v) शैली => केशवदास की शैली पर उनके व्यक्तित्व छाया स्पष्ट दिखाई देती है। केशव ने मुक्तक शैली व प्रबंधन शैली को अपनाया था। केशव दास की शैली प्रौढ़ और गंभीर है। केशवदास ने ऐसी शैली को अपनाया जिसमे अतीत की संचित भाषा, भारी शब्द भाषा का कठिनता का गुण रहा। और अर्थ ग्रहण भाषा पर उन्हे जरा भी ध्यान नही रहा। अनेक कवियो के बीच उनकी कविताओ को पहचाना जा सकता है।

★ केशवदास के काव्य का भाव पक्ष :-

i) प्रकृति - चित्रण => केशवदास राजदरबार के कारण केशव की प्रवृति मे तंगन्ता नही रही है। उनका प्रकृति चित्रण दोष पूर्ण है। केशव दास ने परम्परागत्त वादी चित्रण पर अधिक जोर दिया है। परन्तु नवीनता व मौलिकता कम थी। वर्णन करते समय केशव दास ने ध्यान नही दिया। तथा अलंकारो के बोझ मे प्रकृति अपना सौन्दर्य खो बैठी है।

(ii) भक्ति एवं वैराग्य => रीति काव्य मे श्रृंगार के विसद विवेचना के साथ-2 भक्ति और वैराग्य सम्भव हुई है। भक्ति संबधित विवेचन केवल परम्परा का निर्वाह करने के लिए प्रस्तुत कि है। डा. नगेन्द्र के अनुसार "रीतिकालीन भक्ति एक और सामाजिक है। तो दूसरी और ~~सामाजिक~~ मानसिक त्राम भूमि है, जो इनकी रक्षा करती है।"

रीति युग मे एक प्रमुख शृंगार कवि को भी भक्त कह दिया है। रसिकता एवं विलासता से भरिक कवियो के लिए भक्ति तो बड्सागर पार करने का माध्यम है। संसार तृप्त दुर्लभ मन वाले उन्हे ईश्वर का स्मरण करने के लिए विवश करता है।

(iii) सामन्ती अभिरुचि => रीतिकाल सामन्ती अभिरुचि का काल रहा है। इस काल मे सम्पूर्ण साहित्य आश्चर्यदाताओं की रुचि के लिए अनुरूप रचा है। सामन्ती काली व विलास और शृंगार की प्रधानता है। रीतिकालीन कवि ने नायक - नायिका संयोग - वियोग की दशा का वियोग किया है।

(iv) संवाद - योजना => दरबारी कवि होने के कारण केशव मे राज दरबारो वाक्त वाक्पटुता वर्तमान थी। अतः संवादो की योजना मे उन्हे असाधारण सफलता मिली। उनके संवाद अत्यन्त आकर्षक थे। उनमे राज ~~संवाद~~ दरबारो जैसी हाजिर जवाबी, ~~शिष्टता~~ शिष्टता थी।
उनके द्वारा चरित्रो का उद्घाटन सुंदर ढंग से हुआ। जनक विश्वामित्र, लव - कुश, संवाद, सीता - हनुमान संवाद इसी प्रकार के संवाद है।

(v) पाण्डित्य प्रदर्शन => केशव ने अपने काव्य का माध्यम बुंदेली को बनाया केशव

उच्च कोटी के विद्वान थे। उनके काव्य में कल्पना और ~~मस्तिष्क~~ मस्तिष्क का अधिक योग है। उनका ध्यान जीतना पाण्डित्य प्रदर्शन की ओर था। उतना भाव प्रदर्शन की ओर नही। पाण्डित्य प्रदर्शन की इसी प्रवृति के कारण कुछ आलोचको ने केशव को हृदय हीन कवि कहा। परन्तु आलोक पूर्ण सत्य नही था। अशोक वाटिका में हनुमान जी सीता जी को रामचन्द्र जी की मुन्द्रिका देते है। मुन्द्रिका के प्रति सीता जी का कथन भाव पूर्ण है।

~~श्री पुर मे बन मध्य है, तू मग करी अनी~~

श्री पुर मे बन मध्य है, तू मग करी अनीति।
कहि मुंदरी अब तियन की, को करि है परतीति ॥

(vi) वर्ण्य - विषय => केशव दरबारी कवि थे। अन्य दरबारियों की भाति उन्होने अपने आश्रयदाता राजाओ का यशोगान किया है। वीर सिंह देव चरित्र जहाँ वीर जसचन्द्रिका की उनकी ऐसी रचनाएँ है।

केशव का दूसरा रुप आचार्य का है। कवि प्रिया और रसिक मे उन्होने ग्रंथो का अनुवाद किया कविताओ की रचना की।

(vii) शृंगारी प्रवृति => इस युग में शृंगार मार्ग की प्रधानता रही है।

राम भक्ति का मान मर्यादा व भक्ति

का मार्ग था। इसमे प्रेम लीलाएं नही थी सिर्फ माधुर्य भाव था।

निष्कर्ष => केशवदास रीतिकालीन काव्यधारा के प्रथम आचार्य कवि थे। उन्होंने रामचन्द्रिका कवि प्रिया छन्द मालाओ की रचनाओ काव्य शास्त्र ग्रंथ के रूप मे सामने आये है। परन्तु केशव दास ने भावपक्ष की अपेक्षा कला पक्ष मे छंद, भाषा, अलंकार भाषा मे विशेष महत्व दिया है।
अतः हम ~~कह~~ अ कह सकते है, कि केशवदास ने कला पक्ष को अपने काव्य का प्रथम भाग माना है।

17-9-25

अध्याय - II

बिहारी (बिहारी रत्नाकर)

अवतरण - I

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोई।

प्रसंग => प्रस्तुत अवतरण कवि बिहारी द्वारा रचित बिहारी रत्नाकर से अवतरित है।

संदर्भ => कवि ने राधा जी के सौन्दर्य और प्रभाव का वर्णन किया है।

कठिन शब्दार्थ =>

भव => उत्पत्ति
बाधा => रुकावट
नागरि => प्रवीण स्त्री
सोई => समान

व्याख्या => कवि बिहारी रत्नाकर ने राधा जी से संसार के कष्टों को हरने की प्रार्थना करते है। और बताते है कि उनके गौरे शरीर की झलक पड़ने से श्याम भी हरे रंग के हो जाते है। हे चतुर राधा जी मेरे संसार के सारे कष्ट दूर कर दो। जिस तरह से श्री कृष्ण का श्याम रस व राधा का गौरा रंग मिलकर हरा रंग बन जाता है। उसी तरह से आपके राधे के स्मरण माध्यम से मेरे सारे सांसरिक दुख: व पाप समाप्त हो जाएँगे।

विशेष => (i) बिहारी सतसई के अधिकांश दोहे नायक - नायिका प्रधान है।

(ii) श्रृंगार रस के साथ-2 श्लेष काव्य, अतिशयोक्ति अलंकारों का चित्रण दर्शनीय है।

(iii) दोहा छंद में भाव गंभीर है।

(iv) तत्सम मिश्रित भाषा का प्रयोग हुआ है।

(ii) पाइ महावर दैन को नाइनि बैठी आई।

संदर्भ => कवि ने महावर लगाने के लिए नाई के बारे में बताया है।

कठिन शब्दार्थ => पाइ -> परिधि
महावर -> पारम्परिक लाल रंग
दैन -> उत्पत्ति

व्याख्या => बिहारी कहते हैं नायक नायिका के महावर (रंग) लगाने के लिए आर हुई है। वह पैरों के महावर लगाने के लिए आती है। और नायिका के समक्ष बैठ जाती है। नायक महावरी अर्थात लाल रंग से सरोबार कपड़ा कहीं रखकर भूल जाती है। और भ्रम से नायिका की एड़ी इतनी कोमल और लाल है कि नाई को भ्रम हो जाता है। और ~~परिमा~~ परिणामस्वरूप वह बार-2 नायिका की एड़ियों को मींजती (मोड़ती) जाती है।

विशेष => (i) श्रृंगार रस के साथ-2 श्लेष काव्य अतिशयोक्ति अलंकारों का चित्रण दर्शनीय है।

(ii) दोहा छंद में भाव गंभीर है।

III नहिं परागु नहिं मधुर मधु नहि विकासु इहिं काल ।

संदर्भ => कवि बिहारी द्वारा राजा जयसिंह को सम्बोधित किया है।

कठिन शब्दार्थ => परागु → पुष्पराज
मधु → मिठास
विकासु → खिला हुआ

व्याख्या => कवि बिहारी कहते है, नायिका मे आसक्त नायक को शिक्षा देते हुए कि न तो अभी इसी कली मे पराग आया है, न मधुर मकरंद तथा न अभी इसके विकास का क्षण आया है फिर भी यह अली (भौंरा) इसी कली मे फँस गया है। अरे! भौंरे अभी तो यह एक कली मात्र है, तुम अभी से इसके मोह मे अंधे बन रहे हो। जब यह कली फूल बनकर पराग तथा मकरंद से युक्त होगी। उस समय तुम्हारी क्या दशा होगी। अर्थात् जब नायिका यौवन सम्पन्न सरसा से प्रफुलित हो जायेगी तब नायक की क्या दशा होगी।

विशेष => (i) शृंगार रस के साथ-2 श्लेष काव्य अतिश्योक्ति अलंकारो का चित्रण दर्शनीय है।
(ii) दोहा छंद मे भाव गंभीर है।
(iii) तत्सम मिश्रित भाषा का प्रयोग हुआ है।

(iv) कहत , नटत , रीझत , खिझत , मिलत , खिलत , लजियात ।

प्रसंग => प्रस्तुत अवतरण कवि बिहारी द्वारा रचित कवि बिहारी रत्नाकर से है।

संदर्भ => Received 19/9/25
नायक नायिका के बीच आंखो ही आंखो मे होने वाली प्रेम चेष्टा का वर्णन किया गया है।

कठिन शब्दार्थ => कहत → विचार व्यक्त करना
नटत → मना करना
रीझत → प्रसन्न होना ।
खिझत → खीझना खिलत → प्रसन्न
मिलत → मिलना भरे भौन → भरे हुए घर
लजियात → शर्माना नैनन ही सब बात → आँखो ही आँखो मे सारी बातचीत

व्याख्या => सखि कह रही है कि नायक अपनी आँखो के इशारे से कुछ कहता है। अर्थात् रति की प्रार्थना करता है। किन्तु नायिका उसके प्रेम विषयक निवेदन को अस्वीकार कर देती है। वस्तुत: उसका अस्वीकार स्वीकार का ही वाचक है। तभी तो नायक नायिका के निषेध पर भी रीझ जाता है। जब नायिका देखती है कि नायक इतना कामासक्त कि उसके निषेध पर रीझ रहा है। तो उसे खीझ उत्पन्न होती है।
नायिका की यह खीझ बनावटी है। यदि ऐसा न होता पुन: दोनो को नेत्र कैसे मिलते ? दोनो नेत्रो का मिलना परस्पर रति भाव को बढाता है।

दोनों ही प्रशंसा से खिल उठते है। किन्तु लज्जित भी हो उठते है। उनके लज्जित होने का कारण यह है कि प्रेम विशेष विभिन्न चेतनाएँ भरे भवन अनेक भिड़ न करते है।

<u>विशेष</u> => (i) आँखो के से बातचीत भावनाओं के आदान - प्रदान का चित्रण किया जो शृंगार रस का उदाहरण है।

(v) मंगलु बिंदु सुरंगु, मुख ससि, केसरि आड गुरु।

<u>संदर्भ</u> => यह एक प्रसिद्ध बिहारी का दोहा है, जिसमे नायिका के सौन्दर्य का वर्णन किया है।

<u>कठिन शब्दार्थ</u> => मंगलु बिंदु सुरंगु → लाल रंग की सुन्दर बिंदी।
मुख ~~सस~~ ससि → चन्द्रमा जैसा मुख
केसरि आड. गुरु → केसर से लगाया गया आडा. तिलक

<u>व्याख्या</u> => नायिका के मुख पर लाल बिंदु तथा केसर की पीली आड. देखकर नायक की आँखे प्रेम से परिपूर्ण हो जाती है। वह अपनी दशा को नायिका की सखि से कहता है। कि नायिका का मुख चन्द्रमा के समान है। उसके मस्तिष्क पर लगा हुआ तिलक मंगल है। और केसर का तिरछा तिलक ब्रहस्पति है। कहने का तात्पर्य यह है कि नायिका के सौन्दर्य को देखने से दर्शकों के नेत्रों मे आनंद के आँसु आ जाते है और न देखने के दुख :।

जिस प्रकार तीनो ग्रहो चन्द्रमा, बृहस्पति, मंगल के मिलने से जल वृष्टि होती हैं। उसी प्रकार, नायक से नायिका के मुख मे लाल बिंदी एवं केसर का टीका लगाने से नायक के नेत्र स्नेह भरे हो जाते है। भाव यह है कि नायक के नेत्रो मे प्रेम उमड जाता है।

विशेष => (1) नायिका के सौन्दर्य की तुलना ग्रहो और अन्य वस्तुओ से की गई है।

(6) बैठि रही अति सघन बन, पैठि सदन – तन माहाँ।

सदंर्भ => बिहारी ने जेठ के महिने की अत्याधिक गर्मी का वर्णन दिया है।

कठिन शब्दार्थ => बैठि रहि अति सघन => छाया मे बैठने के लिए पेड
पैठि सदन तन माँहा => घरो मे भी अंदर जाकर छिपना पडता है।

व्याख्या => बिहारी ने प्रत्यक्ष रूप से तो जेठ दुपहरी की भयंकरता का वर्णन किया है। किन्तु एक दूसरा संकेत भी है। जेठ की भिषण दुपहरी को देखकर एक नायिका नायक से कह रही है। कि तुम इस भयानक गर्मी मे कही मत जाओ।
वह कहती है, कि देखो ना, जेठ के महीने मे गर्मी कितनी पडती है। ~~जिसके~~ जिसमे छाया को छाया की जरूरत है।

अर्थात छाया कही है हि नही यह एकान्त मिलन का सुन्दर समय है। ऐसा अवसर बार-2 नही मिला है। अर्थात नायिका इस अवसर के समय का सदउपयोग करने को कहती है।

विशेष => (i) प्रकृति और किसी के आगमन का भाव स्पष्ट दिखाया है।

(7) तंत्री-नाद, कवित्त रस, सरस राग; रति-रंग।

संदर्भ => कवि बिहारी ने वीणा के तारो का संगीत और प्रेम के रंग का वर्णन किया है।

कठिन शब्दार्थ => तंत्री-नाद => वीणा की ध्वनि
कबित रस => छन्द
सरस-राग => मधुर (मनमोहक)
रति-रंग => प्रेम का रस

व्याख्या => वीणा आदि वाद्यो के स्वर काव्य आदि ललित कलाओ की रसानुभूति है। तथा प्रेम के रस मे जो व्यक्ति डूब गये है, वह इस संसार सागर पार कर सकता है। जो इसमे डूब नही सके वह इस भव सिंधु मे फंसकर रह जाएगे। अर्थात कवि कहता है कि नाद (वीणा) ऐसा पदार्थ है, जिसमे बिना पुनरिति के आनंद नही। यदि इसमे पड़ना है तो पुनः पड़ो नही तो इससे दूरी को स्वीकार करो।

विशेष => (i) पंक्ति मे विभिन्न कलात्मक प्रवृतियाँ दर्शायी है।
जैसे -> वीणा का नाद (संगीत)
कविता का रस, सुरीले राम, प्रेम क्रीडा आनंद।

19-9-2025

निबंधात्मक प्रश्न

(1) बिहारी की भक्ति भावना पर निबंध लिखिए? (2024)
(2) बिहारी की बहुज्ञता पर उदाहरण सहित निबंध लिखिए। (2022)
(3) "बिहारी सतसई में श्रृंगार भक्ति और नीति की त्रिवेणी प्रवाहित है" इस कथन पर समुचित प्रकाश डालिए? (2019)
(4) बिहारी एक सफल मुक्तक कवि थे उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए? (2020)
(5) बिहारी की काव्यगत विशेषता स्पष्ट कीजिए? (2019) (Most)

उत्तर => रीतिकाल संवत 1700 - 1900 तक (उत्तर मध्यकाल) साहित्य में इस ~~कथन~~ काल में रीति - नीतियों सम्बन्धित रचनाएँ लिखी गई हैं।

☆ कवि परिचय :- हिन्दी साहित्य के जाज्वल्यमान नक्षत्र रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी का जन्म 1603 ई. में हुआ था। ग्वालियर जिले के बसुआ गोविन्दपुरा गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। तथा गुरु का नाम केशवदास था। बिहारी ने अपने निश्वर देह (मृत्यु) का त्याग किया। सन् 1663 में उन्होंने यह त्याग किया।

☆ बिहारी का जीवन वृत्त => बाल्यकाल बुंदेलखण्ड में बीता और बिहारी की यौवनावस्था शिक्षा - दीक्षा मथुरा वृंदावन में हुई। और

अपना जीवन यापन आगरा मे की। तरूणा अवस्था अपने ससुराल मथुरा मे बीती।

दोहा => जन्म ग्वालियर जानिए
खण्ड बुंदेले बाल।
तरूनाई आई सुघर, मथुरा बसि ससुराल।

कविवर बिहारी जयपुर के राजा जयसिंह के दरबारी कवि कहे जाते है। महाराज जयसिंह ने दूसरा विवाह किया था। वह अपनी नई पत्नी रानी के प्रेम मे इतने डूबे रहते थे, कि राज - काज भी नही ~~सम्भालते~~ संभालते थे। मंत्रियो के राजा के सामने सच बोलने का साहस भी नही था। इसलिए बिहारी ने यह कार्य अपने ऊपर ले लिया और एक दोहा लिखकर राजा के दरबार मे पहुंचाया। बिहारी गागर मे सागर भरने वाले कवि माने जाते है, इन्होने भक्ति सम्बंधित नीति, सम्बंधित तथा शृंगारिक दोहे की रचना की है, इसलिए इन्हे गागर मे सागर भरने वाले कवि माना जाता है।

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहि विकास इहि काल।
अलि कली ही सौं बन्धुओ, आगे कौन हवाल।।

इस दोहे मे राजा ने मंत्री मंत्र जैसा कार्य किया। वह रानी के प्रेम से मुक्त होकर राजकाल सम्भालने लगे।

रचनाएं => रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त काव्य धारा केशव, चिन्तामणि, बिहारी घनानंद, बोधा।

20-9-25

भाव पक्ष की विशेषताएं => भावपक्ष से आशय है, कि कविता में प्रस्तुत वर्ण्य विषय है, बिहारी सतसई के बारे मे यह प्रसिद्ध है। कि त्रिवेणी प्रवाहित कि है। अर्थात श्रृंगार भक्ति एवं नीति से सम्बंधी दोहे कवि के मुख्य रूप विषय रहे है। इसमे भी श्रृंगार के दोहो की अधिकता है श्रृंगार के संयोग व वियोग दोनो पक्षो का चित्रण कवि ने बडी ही सरलता से किया है।

गागर मे सागर => बिहारी गागर मे सागर भरने के लिए विख्यात है गागर ने सागर का अभिप्राय है कि कम से कम शब्दो से अधिक से अधिक बात कह दिए जाए। वास्तव मे बिहारी ने दोहे जैसे छोटे छंद मे एक साथ विभिन्न भाव भर दिये है।

दृग उरझत टूटत कुटुम, जरत चतुर-चित प्रीति।
परति गांठ दुर्जन हिय, दई नई यह रीति॥

20-9-25

★ भक्ति एवं नीति प्रधान रचनाएं => श्रृंगारिक कवि होने पर भी बिहारी ने भक्ति और नीति सम्बंधी अनेक दोहो की रचना की है। उन्होने राधा व कृष्ण की स्तुति पर आधारित अनेक दोहे प्रस्तुत किये है। श्री कृष्ण के प्रति दास्य और दैन्य आदि विभिन्न

भाव व्यक्त किये है। श्री कृष्ण को दिये गये उलाहने और उनके प्रति दिये गये व्यंग्य मे उनका कौशल दर्शनीय है।

कब की टेरतु दीन है, होत न स्याम सहाई।
तुम्हे लागी जगतगुरु, जग नायक जग - बाई ॥

कविवर बिहारी ने बाह्याडम्बरों और जपछाप तिलक आदि का कबीर के समान ही विरोध किया है। और श्री कृष्ण की भक्ति मे लीन होने का संदेह दिया है। नीति सम्बन्धी दोहो मे बिहारी सूक्ष्म दृष्टि प्रत्यक्ष है।

★ **श्रृंगार वर्णन** ⇒ बिहारी श्रृंगार रस के आदित्य कवि माने जाते है। इन्होंने कही राधा श्री कृष्ण के सौन्दर्य का तो कही नायक - नायिका मिलन सम्बंधी प्रसंगो नायको के अंगो विभिन्न मुद्राओ और विभिन्न हाव - भावो का अनुपम ढंग से चित्रण किया है। नख - शिख वर्णन की परम्परा का पालन करते हुए बिहारी ने ऐसे ~~महत्वपूर्ण~~ रसपूर्ण दोहे लिखे है। जो इन्हे श्रेष्ठ श्रृंगारी कवि बनाते है।

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लज्जियात।
भरे भौन मे करत है, नैननि ही सौ बात ॥

बिहारी ने श्रृंगार के अनेक चित्र प्रस्तुत किये है। ऐसे प्रसंगो मे प्राय यथा शक्ति का सहारा लिया जाता है। नायिका की विरह पूर्ण स्थिति ~~को एक~~ का एक चित्र प्रस्तुत है। जिसे नायिका शीतल चन्द्रमा

भी कपट दे रहा है।

ही ही बौंनी विरह - बस के बौरी सब गाऊँ।
कहा जाने ए कहत है, ससिहि सीतकर नाऊ।।

★ प्रकृति चित्रण :- शृंगार वर्णन मे बिहारी ने प्रकृति के विभिन्न मनोहारी चित्र अंकित किये है। उन्होने स्वतंत्र रूप मे भी श्री कृष्ण का वर्णन किया है। मुख्यत: उन्होने प्रकृति का आलम्बन उद्दीपन अलंकारी रूप मे वर्णित किया है। ऐसे वर्णनो सरसता सर्वत्र विद्यमान है।

चुवतु स्वद मकरन्द कन, तरुन, तरुन, तरु तर बिरमाइ।
आवतु दाच्छिन देस ते थक्यो बटो ही हाई।।

★ नायिका भेद निरूपण :- बिहारी ने अपने काव्य मे अनेक प्रकार की नायिकाओ का वर्णन किया है। जैसे → कनिष्का, मुग्धा, पौढा, नयोढा, स्वकीया, परकिया, स्वाधीन, पतिका, तथा अभिसारिका आदि।

★ कल्पना की समहार शक्ति :- बिहारी के काल काव्य मे कल्पना की समहार शक्ति विद्यमान है। दोहे जैसे छोटे छंद मे अधिक भावों होने के लिए इस गुण का होना आवश्यक है। संयोग - वियोग प्रसंगो मे बिहारी ने इस गुण का प्रयोग किया है, नायिका की चेतना की है।

बतरस - लालच लाल की, मुरली धरी लुकाई।
साह करै मौहनु, हसै, कैन कहै नाटि जाई॥

* **उक्ति वैचित्य** => बिहारी की उक्तियो मे वैचित्य है। इनके दोहो मे सरलता अनुमय आकर्षक एवं चमत्कार उत्पन्न करने की विलक्षण शक्ति है। ऐसे स्थलो पर अर्थशास्त्रीय दृष्टिगत होता है।

यथा =>
मेरी भाव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाई परे, स्यामु हरित दुति होय॥

* **सुक्तियो का प्रयोग** :- बिहारी ने नीति सम्बंधी का प्रयोग अधिक किया है। स्वर का वर्णन करते हुए कवि कहते है, कि धतुरे को खा कर लोग पागल हो जाते है।

कनक - कनक तै सौ गुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाए वैराग्य जग, या पाये बैराय।

* **कलापक्ष की विशेषताऐ** :- कलापक्ष से आशय काव्य के बहिपक्ष से है। इसमे भाषा, छन्द, अलंकार, प्रतीक, बिम्ब, उपमान योजना, शब्द चयन शैली काव्यरूप आदि आते है। बिहारी के काव्य की समीक्ष समीक्षा इन दृष्टियों से करे तो यह स्पष्ट हो जाता है। कि कलापक्ष की दृष्टि से भी उनका काव्य अत्यन्त सफल एवं मनोहर है।

1. **भाषा** => बिहारी के काव्य की भाषा शुद्ध ब्रजभाषा है। उन्होंने सतसई के माध्यम से ब्रजभाषा को साहित्यिक प्रतिष्ठा दिलाई है। बिहारी ने पूर्वी हिन्दी, उर्दू, फारसी, बुंदेल खण्डी आदि भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया। उस समय राज-कार्य की भाषा फारसी थी। अरबी-फारसी के शब्दों का खुलकर प्रयोग होना स्वाभाविक ही है।
जैसे → गरूर, इजाफा, बहस, चौगान, इत्यादि। मुहावरों और लोकोक्तियों की दृष्टि से भी उनका भाषा प्रयोग अद्वितीय है।

2. **शैली** => बिहारी ने मुक्तक काव्य शैली को स्वीकार किया है जिसमें शैली का अनुठा योगदान है। इसलिए 'दोहा' जैसे - छोटे छन्द में उन्होंने अनेक भावों को भर दिया है।

3. **छंद** => बिहारी को दोहा छन्द सर्वाधिक प्रिय है। इनका सम्पूर्ण काव्य इसी छन्द में रचा गया है। मुक्तक काव्य के अनुरूप इन्होंने लघु छन्द दोहा चुना, जिसके प्रयोग में वे अत्यंत सफल रहे।

4. **अलंकार** => अलंकारों के प्रयोग में बिहारी ~~पक्ष थे।~~ दक्ष थे। इन्होंने छोटे-2 'दोहों' में अनेक अलंकारों को भर दिया है। इनके अन्योक्ति और अतिश्योक्ति आदि, अलंकारों का अधिक प्रयोग हुआ है। श्लेष और सांगरूपक का एक उदाहरण द्रष्टव्य है।
चिर जीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गंभीर।
को घटि ये वृषभानुजा, वे हलधर के बीर॥

(5) काव्यगुण ⇒ बिहारी काव्य मे माधुर्य गुण की प्रधानता रही है। क्योंकि उनके काव्य के प्रधान विषय शृंगार, भक्ति एवं नीति है। माधुर्य की प्रधानता होते हुए भी गौण रूप से प्रसाद गुण भी प्रयुक्त है।

(6.) काव्य रूप ⇒ मुक्तक काव्य लिखने के बावजूद उनका काव्य लगभग चार सदी गुजर जाने के बाद आज भी लोगों की जुबान पर चढ़ा हुआ है। साहित्य प्रेमी उनके दोहो को बड़े चाव से पढ़ते है।

★ निष्कर्ष ⇒ उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है, कि बिहारी 'सत्तसईया' ने कलापक्ष व भावपक्ष का सुन्दर समन्वय हुआ है। इसमे बिहारी ने भक्ति नीति व शृंगार की त्रिवेणी प्रवाहित है। कवि ने शृंगार की वर्णन मे संयोग व वियोग पक्षो का चित्रण किया है।
बिहारी के काव्य मे रस छंद, अलंकार, काव्यरूप, गुण, भाषा, शैली आदि का सुन्दर समन्वय हुआ है। इस प्रकार कलापक्ष व भावपक्ष की दृष्टि मे उनका काव्य अत्यन्त बेजोड़ रहा है।

24-9-25

* अतिलघुरात्मक प्रश्न

(1) कवि बिहारी हिन्दी के किस काल के कवि है?
उत्तर => रीतिकाल।

(2) बिहारी रीतिकाल के किस काव्य धारा के कवि है?
उत्तर => रीतिसिद्ध।

रीतिबद्ध → आचार्य केशवदास
रीतिसिद्ध → कवि बिहारी
रीतिमुक्त → कवि घनानंद

(3) कवि बिहारी का जन्म कब व कहाँ हुआ। तथा पिता का नाम।
उत्तर => जन्म → सवत् 1603 ई. के आस पास ग्वालियर
~~केशवदास~~ केशवराय पिता का नाम

(4) बिहारी किस जाति के थे?
उत्तर => माथुर चौबे (चतुर्वेदी)

(5) बिहारी के काव्य की मुख्य विशेषता क्या है?
उत्तर => संक्षिप्तता और गहरी व्यजना, उनके दोहे गागर मे सागर करने जैसी हो।

(6) बिहारी के दोहो मे किन विषयो का वर्णन मिलता है।
उत्तर => श्रृंगार, भक्ति, नीती, लोकसंस्कृति के विषयो का वर्णन मिलता है।

(7) "सत्तसैया के दोहरे" दोहा किस कवि से सम्बन्धित है?
उत्तर => यह प्रसिद्ध दोहा कवि बिहारी से सम्बन्धित

है, जो उनके काव्य की लघुता और गंभीरता को दर्शाता है।

(8) बिहारी किस मुगल बादशाहो के कृपा पात्रो में से एक थे?
उत्तर => मुगलबादशाह जांगीर व शाहाजाहा।

(9) बिहारी के गुरु कौन थे?
उत्तर => बिहारी के दो गुरु थे → नहरीदास, वल्लभाचार्य।

(10) कवि बिहारी की भाषा कौनसी है?
उत्तर => ब्रज भाषा।

(11) बिहारी की रचना लिखिए?
उत्तर => बिहारी ~~सतसई~~ की प्रसिद्ध रचनाओ में बिहारी की बिहारी सतसई प्रसिद्ध है। यह श्रृंगार भक्ति व नीति पर आधारित है।

(12) बिहारी रत्नाकर के सम्पादक का नाम क्या है?
उत्तर => जगननाथदास रत्नाकर।

(13) बिहारी के चार महापुरुष कौनसे है?
उत्तर => बिहारी के कई ऐतिहासिक धार्मिक और आधुनिक काल के महान पुरुष रहे है। जिनमे प्राचीन काल के भगवान महावीर, आत्मा बुद्ध, आर्यभट्ट, चाणक्य, सम्राट अशोक और आधुनिक काल के लोकनायक, जयप्रकाश नारायण, स्वतंत्रता, सैनानी कुवर सिहं, नेता श्री कृष्ण सिहं, और डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शामिल है।

ईका इकाई - II

DATE / /
PAGE NO.: 53

अध्याय - 3 देव

अतिलघुरात्मक प्रश्न

① कवि देव का पूरा नाम क्या था ?
उत्तर => देव दत्त द्विवेदी ।

② रीतिकाल मे हिन्दी का मम्मट किसे कहाँ जाता है।
उत्तर => कवि देव को ।

③ कवि देव को सर्वाधिक संतुष्टि किस आश्रयदाता के यहाँ हुई ।
उत्तर => भोगीलाल ।

④ कवि देव का कौनसा ग्रंथ नायिका भेद की दृष्टि से हिन्दी का प्रथम ग्रंथ माना जाता है।
उत्तर => रस विलास ।

⑤ देव द्वारा रचित ग्रंथो की संख्या मानी जाती है।
उत्तर => 52 से 72 ।

⑥ "साँसनि ही सौं समीर गयो अरु आँसुन सब नीर गयो ढरि" पंक्ति मे कौनसा अलंकार है ?
उत्तर => पंक्ति मे अनुप्रास तथा रूपक अलंकार का प्रयोग किया है।

⑦ देव का काव्य शास्त्रीय सम्बंधी ग्रंथ कौनसा है।
उत्तर => ~~सम - रत्नाकर~~ । काव्य - रसायन ।

⑧ देव का संगीत सम्बंधी ग्रंथ कौनसा है ।
उत्तर => राग - रत्नाकर ।

(9) कवि देव ने किस रस को मुल रस माना है।
उत्तर => शृंगार रस।

(10) कवि देव के काव्य की भाषा क्या है।
उत्तर => ब्रज भाषा।

(11) कवि देव ने किसने कितने काव्य गुण माने है।
उत्तर => 12।

(12) कवि देव के ग्रंथ भाव विलास का रचनाकाल क्या है?
उत्तर => 1689।

(13) कवि देव के वर्तमान मे कितने ग्रंथ उपलब्ध है।
उत्तर => 15 ग्रंथ।

(14) कवि देव ने भवानीदत्त वैश्य के आश्रय मे कौनसा ग्रंथ लिखा है।
उत्तर => भवानी - विलास।

(15) डार द्रुम पलना, बिछौना नव पल्लव, किस कवि की पंक्ति है?
उत्तर => कवि देव।

(16) कवि देव की प्रमुख रचनाएँ लिखिए?
उत्तर => भाव - विलास, रस - विलास, भवानी - विलास कुशल - विलास, अष्टयाम, सुजान विनोद, सुजानमणि, काव्य - रसायन, प्रेम दीपिका, प्रेम - चन्द्रिका, सुख सागर, तरंग और देव सतक इनकी प्रमुख रचनाएँ है।

उदाहरण -1

झहरि - झहरि झीनी बूँद है ....
मेरे आँसू है दृगन में ।।

प्रसंग => प्रस्तुत अवतरण कवि देव द्वारा रचित सवैया कवित से अवतरित है।

संदर्भ => ~~विरहिणी~~ विरहिणी नायिका कह रही है कि मैंने जो रात को स्वप्न देखा उसमे मुझे लगा कि झीनी-2 बूँदे गीर रही है।

कठिन शब्दार्थ => झहरि - झहरि -> झरझर की अवाज करती हुई
झीनी -> हल्की
परति मानो -> मानो की पड रही है।
गगन -> आकाश ।
मगन -> आनंदित
घन -> बादल
आनि कह्यौ -> आकर कहा
दृगन मे -> आँखो मे ।

व्याख्या =>

यह प्रस्ताव सुनकर वह खुश हुई। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैं झुला - झुलने के लिए उठ ही रही थी, कि अभागी दुष्ट नींद टूट गई। जागने से नींद का टूटना दुर्भाग्यपूर्ण लगा। मैंने अपनी आँखो को खोलकर श्री कृष्ण को देखना चाहा तो वहाँ न तो आकाश में बादल है, और न ही घनश्याम है। तब मुझ विरहणी को तब आए हुए आसु ही मिले। वह इस दुःख से जो रो पड़ी थी। उसमें आँसु आ गये थे।

विशेष => (i) कविता में ब्रज भाषा में और कवित्त छंद में रची गई है।
(ii) कवित्त में शृंगार रस के संयोग - वियोग दोनो पक्षो का चित्रण किया है।
(iii) " झहरि - झहरि, और घह घहरि - 2 शब्दों में पुनरुक्ति अलंकार का प्रयोग है।
(iv) नायिका के स्वप्न तथा स्वपन के टूट जाने का वर्णन किया है।

अवतरण - II

डार द्रुम पलना ------।
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।

संदर्भ => कवि ने यहां वसन्त ऋतु को एक नवजात शिशु के रूप में चित्रित किया है।

कठिन शब्दार्थ =>
डार → डाली, टहनी।
द्रुम → वृक्ष, पेड़।
पलना → झूला।
नव → नूतन, नया।
पल्लव → पत्ता, सुमन।
तन → शरीर।

व्याख्या => काम देव रूपी राजा वसन्त रूपी बालक के लिए वृक्षों का पालना, नये-2 पत्तों का बिछौना बनाकर, शरीर पर फूलों का ~~शोभायमान~~ शोभायमान झगूला पहनाकर पवन उसे झूलाता है। मोर और तोता उस बालक से मानो जैसे बात कर रहे हो। कोयल बोलकर खुश होती हुई मानो जैसे बच्चों को बहलाने के लिए हाथ की ताली बजाने का काम कर रही है। कमल की जैसे नायिका है, जो पराग को बिखेरती हुई राई, नमक उतारती है, लताएँ जैसे बच्चों को पुचकारी दे रही है। सुबह गुलाब खिलकर मानो चटकारी देता है। और वह राजा कामदेव के वसन्त रूपी बालक को प्रातः जगा देता है।

विशेष => (i) वसन्त ऋतु के सुन्दर, सौन्दर्य का वर्णन बालक से किया है।
(ii) रूपक और उपमा अलंकार का प्रयोग किया है।
(iii) वसन्त को कामदेव (मदन - महीप) का पुत्र बताया है। (iv) शृंगार रस के साथ-2 हास्य-लालित्य और वात्सल्य भाव भी है।

अवतरण - III

खेलत फाग सुहाग भरी अनुरागहिं - - - - - - - |
मदमस्त मनी मन को हरी कै ॥

सदंर्भ => श्री कृष्ण सच्चे प्रेम और सौभाग्य से भरी हुई गोपियों के साथ होली खेल रहे है।

कठिन शब्दार्थ => ~~मैंसत~~ फाग -> फाल्गुन मास
खिलार -> खेल, क्रीड़ा
अनुराग -> स्नेह, प्रेम
बड़भाग -> महान सौभाग्यशाली
कन्हाई - कन्हैया

व्याख्या =>
श्री कृष्ण होली खेल रहे है, वह वास्तविक सच्चे अनुराग से भरे हुए है। और उनके साथ खेलना गोपियों का महान सौभाग्य है। चारों ओर लाल गुलाल उड़ा हुआ है, ढोल - चंग बज रही है। और मृदंग की ध्वनि वातावरण को सुहाना बना रही है। पिचकारियों रंगीन रस भरा हुआ है। और कृष्ण व गोपियाँ एक दूसरे पर अपार व आनन्द की वर्षा कर रहे है। कवि कहते है कि यह ब्रज की होली है। इसे देखकर रसिक भक्तों का मन तृप्त हो जाता है।

विशेष- (i) इसमें कृष्ण की होली का चित्रण जो आनंद और प्रेम का संगम है।
(ii) भाषा रसपूर्ण कर्ण प्रिय है।

(iii) अनुप्रास और ध्वनि पुनरावृत्ति से ~~गीतकात्मकता~~ गीतात्मकता बढ़ती है।

अवतरण – IV

जब तें कुँवर कान्ह! ------।
रावरी कला निधान ।।

संदर्भ => यह पंक्ति होली पद का हिस्सा है, जिसमें कवि श्री कृष्ण की होली के दृश्य का वर्णन करते है।

कठिन शब्दार्थ => जब तें → जब से
कुँवर कान्ह → यशोदा के लाल श्री कृष्ण
रावरी → तुम्हारी
कला निधान → सभी कलाओ के स्वामी

व्याख्या =>

कवि पंक्ति के माध्यम से कृष्ण की दिव्यता और उनकी लीलाओ के ~~तथ~~ प्रभाव का वर्णन कर रहे है। वह कहते है, यशोदा के लाल कृष्ण (जो सभी कलाओ के भंडार है) प्रकट हुए है, तभी से संसार मे प्रेम भक्ति का प्रकाश फैल गया है, उनके रूप, रास लीलाओ सभी को मोहित करती है। विशेषकर होली के समय उनकी लीलाएँ और भी आकर्षक हो जाती है। जब वह गोपियो के साथ रंग खेलते है, और प्रेम का प्रसार करते है।

विशेष =>

(i) कृष्ण के रूप और लीलाओ का वर्णन किया है।
(ii) शृंगार रस और भक्ति रस का वर्णन हुआ है।
(iii) ब्रज भाषा की मिठास प्रयुक्त कि है।

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न (1) देव के काव्य में लाक्षणिता और वेंग्यात्मकता के सौन्दर्य के सहज वक्षम होते है " इस काव्य को सपरिणाम सिद्ध कीजिए "।

अथवा

देव की काव्य की ब्रज भाषा मे ह्विन्दसात्मका तथा लाक्षणिकिता, चित्रमायता तथा सवाभिकता का अप्रभूत समन्वय हुआ है " इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए "।

उत्तर => सामान्य परिचय =>

देव रसवादी आचार्य कवि थे। इस कारण उन्होंने शृंगार के रसवाजकल को उन्मुक्त काण्ड से स्वीकार करते हुए उसे अपनी मौलिक चेतना से अनुप्राणित कर काव्: की मूल वृति के रूप मे परिगत किया आचार्य राम चन्द्र शुक्ल का कथन है "इनका 'सा' अर्थशोषणओं और नमोन वेश, बिरलेही कवियो मे मिलता हैं। रिति काल के कवियों मे यह बड़े ही प्रगत व और प्रतिभासम्पन्न कवि थे। इसमे सन्देह नही कि देव की रचनाओं में कल्पना की ऊँची उड़ान तथा अभिव्यंजना शैली

भी सराहनीय है। उन्होंने सौन्दर्य पूर्ण गतों के अनेक चित्रण उतारे हैं।

1. देव का कवित्त कौशल => रीतिकालीन परम्परा के अनुसार देव ने रस नायक का भेद, गुण, अलंकार, भाव, स्वस्योजन, एवं छन्द आदि है। पर विस्तार में प्रकाश डाला तथा दोहों में लक्षण प्रस्तुत करके कवित्त और सवैया में उदाहरण दिए हैं। उन्होंने प्रत्येक शब्द का बड़ा सहीक सही प्रयोग किया है। जिससे उनके काव्य में माधुर्य चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता, दर्शनिकता आदि का अच्छा समन्वय हुआ है। उनकी इन विशेषता को लेकर डॉ. नरेन्द्र ने उन्हें कोमल भावनाओं का धनी भावुक रसिक और शब्द सिद्ध शिल्पी बताया है।

2. देव के काव्य में विद्यमान विशेषताएँ =>

(i) देव के काव्य में ध्वन्यात्मकता :- देव ने अपने काव्य में उक्ति कौशल को अधिकाधिक अधिक बनाने में व्यंजना का आश्रय लिया है। सौन्दर्य में सरसता लाने के लिए इसे कार्य प्रयोग देव ने किए हैं। जिनमें नायक के मनोदशाएँ का मनोदशाओं को व्यंजना के स्वर पर उभारा गया है।

दे६ मासिश बसायो ---- लगाई लियो ओरको आदि लाल्लो।

इस छन्द मे नायक की स्पर्शी को अतिशय व्यजनी व्यंजित करने के लिए नायका की चेतना को जड़त रूप एवं तन्मय बतलाया गया है। प्रियतमा के सम्पूर्ण अनपुतगों में प्रेम माधुर्य व्यापके है। इस कारण उसकी सम्पूर्ण चेतना भावनात्मक हो गई है। यह रस ध्वनी के साथ परन्तु अलंकार ध्वनी का अच्छा उदाहरण है।

"यों सुनि औचे रोजन पर अनुरान के अंकुर से छठ आमें"

इसमे कोज पर अनुराग के प्रेमाजकर उठ आने की कल्पना करके नायका के रूप यौवन और प्रेम भावना को एक साथ व्यंग्य रूप मे उभारा है।

2. लाक्षाणिकता का प्रयोग =>

देव के काव्य मे उक्ति को अधिक मार्मिकता और चारुकता प्रदान करने के लिए लाक्षाणिकता प्रयोग किए गए है। विशेषकर श्रृंगार वर्णन मे प्रेम भाव व रूप सौन्दर्य का अतिशय चित्रण करने के लिए लक्षण का प्रयोजनगत तथा प्रयोग देखा जाता है।

3. देव के काव्य मे विद्यमान विशेषताएँ =>

देव "पथा" 'एकन नैनन ही लालचाया।
लचार्थ सु एकन सैनन कै कै,
है गुलउचाय लचाये, लला सु बचायें
ओढनि केरस लैके ।।

प्रसंग -> इस प्रसंग मे गोपियो की विभिन्न चेष्ठा का वर्णन किया गया है, प्रत्येक गोपी प्रिय श्री कृष्ण को रिझाना चाहती है। उनका विशिष्ठ प्रयोजन कृष्ण को अपनी ओर आकृष्ठ करता है और अन्य बातो से उन्हें निभृत कर प्रभावित करना है।

पंक्ति => बार मे धाई घँसी बिरधार है।
जाय फँसी उकसी न अबेरी।
बेग ही बूडि गई पंखियाँ।
अखियाँ मधु की मखियाँ भई मेरी ॥

इसमे घाँती विराधार का अखियाँ आदि प्रयोगो मे प्रयोजन विशिष्ठ को स्पष्ठ करने के लिए लाक्षता का प्रयोग किया है। इसमे शब्द कौशल भी दृष्टव्य है। चित्रात्मक वर्णन है।

अन्य कवियो की अपेक्षा देव ने चित्रात्मक वर्णन कर लिया है। अपनी उत्कृष्ठ प्रतिभा को परिचय किया है। अप्रस्तुत विभाग का प्रयोग किया है। रूप सौन्दर्य का चित्रण चित्र खिचने मे क्योकि भावाविकता एक चित्रकार की भाँति दिखाई देती है।

यथा => "माखन सो तनु दूध सो जोपनु।
है दुधित ते अधिको उन ईठी।
जा छवि आगे छपाकर छाँछ
समेत, सुधा वसुधा सब सीठी ॥

शृंगार वर्णन मे उद्दीपन विभाव और अनुभावो का वर्णन करते हुए देव ने नायिका को प्रमुख

आधार बनाया है। और रूप सौन्दर्य के रमणीय चित्रो का संयोजन किया है। इसी प्रकार देव ने प्रकृति की सौन्दर्य व स्वतंत्र एवं स्वनिस्चित्र भी प्रस्तुत है जो बहुत ही आकर्षक है।

यथा => "सुनी के धुनि चातकु मोरनि की चहुं मोरनि कोकिल कूकनि सौं।
अनुराग भरे हरि बागन मखि राग तराग अचूंकनि सौं।।
यहाँ देव ने ....

(५) स्वाभाविकता का समावेश => शृंगार वर्णन मे रीतिकालीन कवियो ने उक्त वैचित्र आदि क्रय प्रगतशील एवं अतिश्योक्ती चित्रण का सहार लेकर विस्तृत सनात्मक चित्रण प्रस्तुत किए है। इस काल कारण इनके काव्य मे थोडी भावुकता रह गई है। परन्तु कवि देव इस दोष से मुक्त रहे है। उन्होने कुआ एवं अतिश्योक्ति का सहासलिया तथा स्वाभाविकता को प्रधान दी है। विशेषता विरह वर्णन मे होने नायिका की ~~विभिन्नता~~ विभिन्न दशाओ का स्वाभाविक चित्रण किया है।

निष्कर्ष => इस प्रकार निष्कर्ष मे कहा जाता है कि देव के काव्य मे ध्वयनात्मकता, लक्षणामिका, चित्रव्यता, भाविकता का अनोखा समन्वय हुआ है। इस विशेषता को लक्ष्य कर एक विद्वान का कथन है" देव ने भाव-भूति की तरह भावकता एवं व्यजंना का उत्कृष्ट है, साथ ही उसमें अभिदा की सान्ता लक्षणा की विशिष्टता का अविर वा समन्वय हुआ है। ऐसे वैशिष्ट्य के कारण महाकवि देव का काव्य रीतिकालीन काव्य धारा मे अनुपम है।

ईकाई - III

6-10-2025

अध्याय -(i) कवि भूषण

अतिलघुरात्मक प्रश्न

(1) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार भूषण का जन्म कब हुआ था।
उत्तर => 1613 ई.।

(2) रीतिकाल के वीर रस विख्यात कवि कौन है?
उत्तर => कवि भूषण।

(3) भूषण का जन्म कब व कहाँ हुआ था?
उत्तर => भूषण का जन्म लगभग 1613 ईस्वी में तिकवापुर कानपुर उत्तर प्रदेश में हुआ था।

(4) शिवराज क्या है?
उत्तर => अलंकार ग्रन्थ।

(5) भूषण क्या थे?
उत्तर => कन्यकुब्ज ब्राह्मण।

(6) शिवाजी के आश्रय में रहने वाले कवि कौन थे?
उत्तर => कवि भूषण।

(7) कवि भूषण की रचनाएँ लिखिए?
उत्तर => शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक, भूषण उल्लास, भूषण हजारा आदि।

(8) भूषण को हिन्दू जाति का "प्रतिनिधि कवि" किसने कहा है।
उत्तर => रामचन्द्र शुक्ल।

(9) शिवराज भूषण मे कितने अलंकारो का निरूपण है।
उत्तर => 105।

(10) शिवा बावनी छंदो की संख्या कितनी है।
उत्तर => 52।

(11) राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने वाले कवि का नाम लिखिए।
उत्तर => कवि भूषण।

(12) 'सरजा' किसकी उपाधि है?
उत्तर => कवि भूषण।

(13) भूषण ने किस भाषा मे अपने साहित्य की रचना कि है?
उत्तर => ब्रज भाषा।

(14) भूषण ने अपनी रचनाओ मे किस रस का प्रयोग किया है?
उत्तर => वीर रस।

(15) भूषण ने अपनी रचना शिवराज भूषण किस राजा को समर्पित किया है।
उत्तर => शिवाजी।

(16) भूषण का साहित्य परिचय दीजिए।
उत्तर => कवि भूषण रीतिकाल के आदित्य वीर रस के कवि थे। जिन्होंने श्रृंगार के बजाय वीरता राष्ट्रीय, और देश प्रेम पर जोर दिया।

उनकी भाषा ओजपूर्ण ब्रज भाषा है।

(17) शिवाजी के आश्रम में रहने वाले कवि का नाम बताओ।

उत्तर => कवि भूषण।

(18) कवि भूषण ने महाराजा शिवाजी की तुलना किससे की है।

उत्तर => चम्पा के पुष्प से।

(19) भूषण ने किसके शासन की सराहना नहीं की है।

उत्तर => जयचन्द।

(20) भूषण किस प्रकार के कवि थे?

राष्ट्रीय।

(21) कवि भूषण को भूषण की उपाधि से किसने सम्मानित किया था।

उत्तर => राजा हृदय राम के पुत्र रुद्र ~~सोलंकि~~ सोलंकि द्वारा।

(22) शिवा बावनी में किसका वर्णन है?

उत्तर => शिवाजी के प्रताप, युद्ध पराक्रम का।

अवतरण - I

उतारि पलँग ते न दियो है धरा पै ---------।
तीन बेर खाती तेवै तीन बेर खाती है ।।

प्रसंग => प्रस्तुत अवतरण कवि भूषण द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता कि प्रशंसा मे लिखा गया है।

संदर्भ => कवि ने यहाँ शिवाजी के पराक्रम से शत्रु देश की स्त्रियों की भयभित अवस्था का वर्णन किया है। तथा शिवाजी की वीरता और युद्ध नीति की ख्याति का वर्णन किया है।

कठिन शब्दार्थ =>

उतारि पलँग ते => बिस्तर से उतरकर
धरा पै पग => धरती पर पैर।
निसिदिन => दिन - रात
धाक => भय
घूपै => धूप मे
पुनि => फिर
तीन बेर => दिन मे तीन बार।

व्याख्या => शत्रु देश की स्त्रियाँ इतनी भयभीत है, कि वह बिस्तर से उतरते समय धरती पर पैर रखने से भी डरती है। क्योंकि उन्हे भय है, कि उन्हे कही धरती के माध्यम से शिवाजी की सेना पहुंच न जाए। वह सदा घबराई हुई रहती है, और बिना रुके

इधर - उधर भागती रहती है। वह स्त्रियाँ व्याकुल और मुरझाई हुई रहती है। उनका शरीर, बोलने का ढंग भी शोभा नहीं देता वह क्रोधित होकर बोलती है।

कवि भूषण कहते है कि! हे सिंह समान शाहजी शिवाजी के पुत्र! तुम्हारी कीर्ति और पराक्रम कि चाप सुनकर शत्रुओ कि स्त्रियाँ रोने लगती है। वह स्त्रियाँ भय के कारण रात्रि मे बाहर नही जाती परन्तु दिन के समय हि निकलती है, वह दिन मे केवल तीन बार भोजन करती है। और वही दिनचर्या दोहराती है। डर के कारण उनका जीवन असामन्य ~~और~~ हो गया है।

विशेष ⇒ (i) वीर रस की प्रधान है।
(ii) उपमा, रूपक व अनुप्रास अलंकार प्रयुक्त है।
(iii) पद्य की भाषा ब्रज भाषा ओज व प्रभाव दोनो गुण है।

अवतरण - II

ऊँचे घोर मंदर के अंदर ------। (2025)
नगन - जड़ाती ते वे नगल जड़ाती है -----॥

संदर्भ ⇒ पद्य मे कवि भूषण ने शिवाजी की वीरता का ऐसा प्रभाव बताया है, कि शत्रु देश कि स्त्रियाँ सुख सुविधा छोड़कर उनके भय से महलो मे छिपी है।

कठिन शब्दार्थ =>

ऊँचे - ऊँचे मंदर → ऊँचे और मजबूत महल

अंदर रहनवारी → भीतर रहने वाली स्त्रियाँ

कंद मूल → जगंली फल - फूल

त्रास → डर

नगन → जडाती गहने उतार देती है, अलंकार रहित हो जाती है।

ब्याख्या => शत्रु देश कि ~~स्त्रियाँ~~ स्त्रियाँ ऊँचे और मजबूत महलों के भीतर छिपकर रहने लगी है। वह उन्ही ऊँचे महलो मे हि अपने आप को सुरक्षित समझती है। वह अब स्वादिष्ट भोजन नही करती केवल जंगलो के फल - फूल खाकर जीवन व्यतित करती है। वह दिन मे तीन बार यह भोजन खाती है। उनके शरीर दुर्लभ तथा थके हुए हो गये है। तथा गहने ढीले आने ~~से~~ ~~मये~~ लगे जाते है। अर्थात् भय से उनका शरीर निर्लभ हो गया है।

कवि भूषण कहते है कि वीर शिवराज तेरे नाम से हि ऐसा आतंक छा गया है, कि शत्रु पक्ष कि स्त्रियाँ सजने सवरने तक छोड देती है।

विशेष => (i) वीर रस भाव शौर्य प्रयोग मे लिखा है।

(ii) भाषा ब्रज भाषा ओज पूर्ण है।

(iii) अनुप्रास और उपमा अलंकार विद्यमान है।

(1) भूषण की वीररस की कविताओं को विस्तारपूर्वक समझाइए ? (2025)

(2) भूषण रीतिकाल में वीर रस काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं, स्पष्ट कीजिए ? (2016)

(3) "भूषण राष्ट्र कवि थे"? स्पष्ट कीजिए ? (2018)

(4) भूषण के काव्य का "राष्ट्रीय महत्त्व" शीर्षक देकर टिप्पणी लिखिए ?

उत्तर ⇒ भूमिका ⇒ महाकवि भूषण रीतिकाल के तीन प्रमुख हिन्दी कवियों में से एक थे। अन्य दो कवि बिहारी तथा शृंगार रस में रचना कर रहे थे। महाकवि भूषण का जन्म संवत 1670 तदनुसार ईस्वी 1613 में हुआ। व मूलतः टिकवापुर गाँव के निवासी थे। जो वर्तमान में उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले में स्थित है। उनके भाई चिंतामणि और मतिराम भी कवि थे।

"शिवराज" भूषण ग्रंथ के निम्न दोहे के अनुसार भूषण इनकी उपाधि है। कहा जाता है कि एक दिन भाभी के ताना देने पर उन्होंने घर को छोड़ दिया और कहीं आश्रम में रहने लगे।

कुल सुलंकी चित्रकूट- पति साहस सील - समुद्र।
कवि भूषण पदवी दई ~~कि~~ हृदय राम ~~सुख~~ सुत रुद्र॥

संवत 1772 तदनुसार ईस्वी 1715 में भूषण परलोक

वासी हो गये।

=) रीतिकाल के कवियो का मुख्य उद्देश्य शृंगार विलास तथा यौवन के मानस रङ्ग का सर्वरूप चित्रण करना रहा है। इस कारण उनके काव्य मे तत्कालीन समाज मे चल रहे। भाव परतिभातो का वर्णन नही मिलता है। उस समय के प्रयास भी कवि रीतिबद्ध एव स्वचछन्ता के दर घेरे मे खडे थे। उसी मे अपने काव्य को उत्कृष्ट मानते थे। कुछ कवि ऐसे भी थे जो तत्कालीन सामाजिक जातिय जीवन से जुडे हुए थे। ऐसे कवियो मे भूषण पद्माकर सूदन आदि कवियो ने ओजस्वी भाषा मे वीररसात्मक काव्य की रचना की।

भूषण के काल का राष्ट्रीय परिवेश

जिस समय भूषण का आविर्भाव हुआ उस समय भारत की राजनैतिक परिस्थितिया विषम थी। अपने पूर्व वर्ती बादशाहो की अपेक्षा औरंगजेब के हृदय मे हिन्दू जनता के प्रति अधिक आक्रोश एवं घृणा थी। औरंगजेब अत्यन्त असहनशील पर्वती का बादशाह था। वह हिन्दू धर्मावलियो पर अत्याचार करता था। इस कारण उस समय ऐसे किसी शक्ति शाली नायक की आवश्यकता थी, जो हिन्दू जनता को औरंगजेब से अभयप्रदान करा सके।
इस आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए भूषण ने छत्रपति शिवाजी का आश्रय लिया। और उनकी परिस्थिति मे ऐसी वीर रस कविताएँ रची जिन्होने राष्ट्रीय भाषा को नवीनगति प्राप्त की।

और औरंगजेब भारतीय सभ्यता और हिन्दू धर्म को मिटाना चाहता था। इसलिए अपनी कविताओ मे उनके विरुद्ध

स्वप्न नास का अत उल्लेख करते हुए यह कहा जाता है -

आपस की फूट ही तें सारे हिंदुवान टूटे टूटयो कुल
~~सबल~~ रावन अनीति अति करते।
पैठियो पताल बलि ब्रजधर ईरषा ते टूटयो हिरनाच्छ
अभिमान चित धरतें॥

कुछ लोग भूषण को मुस्लमानो के प्रति साम्प्रदायक विद्वेश रखने वाला कहता है। परन्तु यह आरोप वंचित है। उन्होंने न्याय प्रिय अकबर कुमायू आदि मुगल शासको प्रशंसा कि है।

बाबर कुमायु अकबर हद बाच गये।
हिन्दू औ तुरक की कुरान बेंद जावति॥
याही पात साहिन मे हिन्दून की चाहत थी।
जाँहगीरि, साहजन शाहपूरे ताब को॥

भूषण की राष्ट्रीय विचारधारा

भूषण हिन्दी साहित्य के ऐसे प्रथम कवि है, जिन्होंने अनुप्राणित काव्य का प्र

महाराजा छत्र छत्रसाहब शिवाजी उस काल मे वीर पुरुष थे, जो राष्ट्रीय चेतना से मण्डित थी

कवि भूषण ने अपने काव्य मे उपत दोनो के वीरता पूर्ण कार्यो का बड़वीर वर्णन किया।
और उनके व्यक्तिगत जीवन कि थोड़ी सी झलक अपने काव्य मे दिखाई है।

राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय कवि चेतना

कुछ आलोचना भूषण के काव्य मे राष्ट्रीयता के स्थान पर जातियता का आरोप लगाते है।
भूषण ने हिंदुस्थान एवं हिंदुत्व को राष्ट्रीयता का रूप देकर उसकी सुरक्षा करने वाले ~~स्वतंत्रं~~ स्वतंत्रता के लिए जान की बाजी लगाने वाले। शिवाजी एवं छत्रसाह का प्रमाती दान किया है।
इस दृष्टि से भी भूषण कि जातियता उस काल की राष्ट्रीयता थी। भूषण की इस तरह की राष्ट्रीय विचारधारा को देखकर आचार्य
"भूषण ने जिन दो नायको की कीर्ति को अपने काव्यों व अन्याय दमन मे तत्पर हिन्दू धर्म के संघर्ष के दो इतिहास वीर थे।

उनके प्रति ~~भ~~ भक्ति और सम्मान की प्रतिष्ठा और हिन्दू जनता के हृदय मे उस समय भी थी।
वीर रस के उद्गव साची जनता के हृदय ~~की~~ ~~के~~ की सम्पति हुई। भूषण की कविता कृति सम्बंधि एक अविवेचन सत्य का दृष्टांक है।
दृष्टांत

8-10-2025

महाकवि भूषण राष्ट्रीय भावों के गायक है। इनकी वाणी पीड़ित प्रजा के प्रति अपूर्व
इनका समय औरंगजेब का शासन था। भूषण ने तत्कालीन जनता की वाणी को अपनी

उन्होंने स्वदेशानुराग, संस्कृति अनुराग, साहित्य अनुराग, महापुरुषों के प्रति अनुराग, उत्साह आदि का वर्णन किया है। निःसन्देह ही भूषण का काव्य राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। वह सच्चे शब्दों में राष्ट्र कवि है।

* साहित्य में स्थान => महाकवि भूषण का हिन्दी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान है, वह वीर रस के अद्वितीय कवि थे। रीतिकालीन कवियों में वह पहले कवि थे जिन्होंने विलास की उपेक्षा राष्ट्रीय भावना को प्रमुखता प्रधानता की। तत्कालीन असहाय हिन्दू समाज की वीरता का पाठ पढ़ाया। रक्षा के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया। वह राष्ट्र की अमर धरोहर है।

* काव्यगत विशेषता

→ छत्रपति शिवाजी महाराज की दान वीरता, युद्ध वीरता, धर्म वीरता का वर्णन किया। भूषण के काव्य में उत्साह वह शक्ति भरी हुई है। इसमें हिन्दू जनता कि भावनाओं को ओजमय में अनकन किया। भूषण ने कहा है। यदि छत्रपति शिवाजी महाराज न होते तो

Ajanta
DATE / /
PAGE NO.:

मुक्त हो गया होता।

भूषण की कविता का अंगिर रस, वीर रस है, इनकी रचनाएं शिवराज भूषण, शिवा बावनी, छत्रसाल दशक वीर रस से ओत-प्रोत है। काव्य का आधार ऐतिहासिक है, इसके अतिरिक्त देश की संस्कृति व गौरव का गान है। भूषण ने अपने देश के प्रति आक्रोश ~~चक~~ सम्पन्न व्यक्त किया।

भूषण कि वीर भावना का वर्णन बहुयामी है, इसे हम युद्ध मुल्क, धर्म मुल्क, दान मूल्क, स्तुतिमुल्क आदि रूपों में देख सकते है।

निष्कर्ष => उपत विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि भूषण के काव्य में राष्ट्रीयता विचारधारा को समस्त अभिव्यक्ति मिली है। तत्कालीन शास्त्री को भारतीय संस्कृति और जातीय गौरव की न्यूनता से वंचित कराया। धरण की ~~तट~~ कटरता रखने वाली शासक व्यवस्था का विरोध करके सुशासण को रीतिकाल के अन्य कवि श्रृंगार के चित्रों पर मोहित हो रहे है। वहाँ भूषण ने राष्ट्रीय कविता को पूरा करने का कार्य किया इसलिए हिन्दी के राष्ट्रीय विचारधारा में भूषण को अग्रणी माना है।

① रीतिकाल के किस कवि को साक्षात रसमूर्ति कहा जाता है।

उत्तर => घनानंद ।

② घनानंद का जन्म कब व कहाँ हुआ था।

उत्तर => संवत् 1746 (1689) ई. बुलंदशहर जनपद में उ. प्र.)

③ घनानंद किस बादशाह के दरबार में रहते थे।

उत्तर => मोहम्मद शाह रंगीला ।

④ घनानंद की काव्य भाषा क्या है।

उत्तर => ब्रज भाषा ।

⑤ घनानंद बादशाह के दरबार में किस पद पर कार्यरत थे।

उत्तर => मीर - मुंशी।

⑥ घनानंद की प्रिया का नाम क्या था?

उत्तर => सुजान ।

⑦ घनानंद के काव्य में कौनसा प्रधान है?

उत्तर => वियोग श्रृंगार ।

⑧ घनानंद की प्रमुख रचनाएँ लिखिए।

उत्तर => सुजान सागर, सुजान हित, विरहलीला, इश्कलता, कृपाकंद निबंध, वियोग बेली, इसके अतिरिक्त प्रेम पद्धति, प्रेम पत्रिका, यमुना यश, आनन्दघन जू जू की पदावली जैसी लगभग

५० रचनाएँ मानी जाती है।

(9) घनानंद के आश्रयदाता राजा कहाँ रहते थे।
उत्तर => दिल्ली।

(10) घनानंद के अनुसार प्रेम का मार्ग क्या है।
उत्तर => अतिशय सीधा।

(11) घनानंद की मृत्यु कब व कैसे हुई।
उत्तर => 1760 87 वर्ष मथुरा पर अहमदशाह अब्दाली के प्रथम आक्रमण के समय घनानंद की मृत्यु हुई।

(12) घनानंद राधाकृष्ण की उपासना किस भाव की है?
उत्तर => सखी भाव से।

(13) घनानंद की किस रचनाएँ किस काव्य के अन्तर्गत आती है।
उत्तर => मुक्तकाव्य।

(14) घनानंद कवित्त नामक रचना में कुल कितने छंद है?
उत्तर => 505 छंद।

(15) घनानंद का प्रिय छंद कौनसा है।
उत्तर => कवित्त छंद।

(16) रीतिकाल के किस कवि को प्रेम का पीर कहा है।

उत्तर => घनानंद ।

(17) नीर स्नेही को लाय कलंक निरास ह्वे कायर त्यागत प्रानै " यह काव्य पंक्ति किसकी है।

उत्तर => घनानंद ।

(18) घनानंद को रीतिकालीन प्रभाव से मुक्त किसने माना है ?

उत्तर => डॉ विश्वनाथ प्रसाद ने ।

(19) अति सूधो सनेह को मारग है, किसकी पंक्ति है ?

उत्तर => घनानंद ।

(20) घनानंद का जीवन किसके समान उड़ा रहता है ।

उत्तर => प्रेम की पीर या वियोग श्रृंगार मे उनकी प्रेमिका सुजान के समान घनानंद का मन उड़ा रहता है।

Q. (1) कवि घनानंद का काव्य विशेषताएं या भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए ?

अथवा

कवि घनानंद भक्ति भावना काव्य विशेषताओ पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर :- भूमिका :- रीतिकाल हिन्दी साहित्य का वह काल है जिसमे श्रृंगार रस और नायक - नायिका प्रेम की प्रधानता रही है इसी काल मे अनेक कवियों मे भक्ति काल मे अनेक कवियो मे भक्ति और प्रेम दोनों का सुन्दर समन्वय प्रस्तुत किया है। इन्ही कवियो मे कवि घनानंद का नाम अत्यंत समान प्रर्वक लिया जाता है। उनका काव्य मानवीय हृदय की कोमल भावनाओ विरह वंदना प्रेम की तीव्रता व भक्ति कि गहराई का अद्भुत संगम है। उन्होने सांस्कारिक प्रेम मे छिपे ईश्वरीय प्रेम का ~~पहुचा~~ पहचानकर अपने काव्य को आध्यात्मिक उचाँई दी।

★ कवि का संक्षिप्त परिचय :-

घनानंद का वास्तविक नाम भक्ति नाथ या हरि नाथ माना जाता है। वे भरतपुर के राजा नागरिदास "सुरजमल" के दरबारी कवि थे। कहा जाता है कि सुजान नाम एक स्त्री से प्रेम करते थे जब यह बात राजा को पता चली तो घनानंद ने दरबार छोड दिया ब्रज की ओर चले गए। वही पर उन्होने प्रेम और विरह की साधना की और घनानंद नाम से प्रसिद्ध कर।

काव्य मे भक्ति का स्वरूप :-

घनानंद की भक्ति भावना मानवीय प्रेम से ईश्वरीय प्रेम की ओर आरोहण करती है। उन्होंने भक्ति को केवल मंदिर या आराधना का विजय नही माना बल्कि प्रेम के माध्यम से आत्मा और परमात्मा के मिलन का मार्ग बताया है। उनकी भक्ति को "रसिक भक्ति" कहा गया है जिसमे भक्त स्वयं को प्रेमिका और ईश्वर को प्रेमी के रूप मे अनुभव करता है। उदाहरण के लिए वह कहते है कि जैसे मन सुख पायो।
उनकी आत्मा ईश्वर मे तीन लीन होने का आनन्द मिला है।

घनानंद की काव्य विशेषताएँ :-

(i) गहन प्रेम और विरह की अनुभूति :-

घनानंद का काव्य प्रेम के गुढ़ और आत्मिक स्वरूप से परिपूर्ण है, उन्होंने प्रेम को केवल भौतिक नही बल्कि आध्यात्मिक अनुभूति के रूप मे व्यक्त किया है। उनके काव्य मे वियोग की वेदना और मिलन की अभिलाषा दोनो ही बड़ी मार्मिकता से चित्रित है।

उदाहरण - " लोग कहे घर-घर की बाते
हम कहे अपने मन की ॥

भावो की कोमलता और गहराई :-

उनकी भावनाएं अत्यन्त कोमल और हृदय स्पर्शी जीवनानुभव से जुड़ी है।

★ घनानंद का काव्य सौन्दर्य :-

(1) प्रेम व श्रृंगार
(2) ~~अलौकिक प्रेम~~ प्रेम की पीर एवं विरह वर्णन
(3) अलौकिक प्रेम
(4) सरस शिल्प सौष्ठव
(5) कलात्मकता
(i) भाषा
(ii) अलंकार
(iii) छंद
(iv) शैली
(v) शब्द

घनानंद प्रेम के कवि है, ब्रज भाषा मे प्रवीण है और स्वछंद स्वभाव के है. प्रेम के पीर या विरह की व्यंजना मे बेजोड़ है।

अति सूधो सनेह को मारग है, जहाँ नेकु सयानप बाँकु नही।
तहा साँचे चलै तजि आपुनपौं, झझकै कपटी जे निझाँकु नही।
घन आनन्द प्यारे सुजान सुनो, इत एक तै दूसरो आँकु नही।
तुम कौन धौं पाटी पढ़े हो लला, मन लेहु पै देहु छटाँकु नही॥

★ संवेदनात्मक विशेषताएँ :-

(i) प्रेम की पीर (ii) मत्वी अनुभूति (iii) विरह श्रृंगार
(iv) निश्छल व अलौकिक प्रेम (v) सौंदर्य प्रियता

(i) प्रेम की पीर => घनानंद को प्रेम की पीडा का कवि माना जाता है।

(2) सच्ची अनुभूति :- दिनकर ने अपनी पीड़ा मे रोने वाला कवि कहकर व्यक्त किया है।

(3) विरह श्रृंगार :- जिसमे विरह की गहराई और वेतना का चित्रण मिलता है।

(4) निरछल व अलौकिक प्रेम :- जो कि लौकिक स्तर (सुजान) प्रेम मे अलौकिक (कृष्ण भक्ति) की ओर बढ़ता है।

(5) सौंदर्य प्रियता :- इसमे सुजान के रूप सौन्दर्य और उसके व्यवहार का वर्णन किया गया है।

★ शिल्प गघ विशेषताएँ ⇒

(1) शुद्ध ब्रज भाषा ⇒ घनानंद ने कवियो के विपरित ब्रज भाषा को शुद्ध और परिष्कृत और अरबी, फारसी के प्रभाव से मुक्त रखा।

(2) शब्द शक्तियों का प्रयोग :- उन्होने लक्षणा और व्यंजना शक्ति का सटिक और सादा प्रयोग किया जिससे काव्य मे अर्थ की गहराई आती है।

(3) मुहावरों और लोकोक्तियो का प्रयोग :- चमत्कार लाने के लिए मुहावरो और लोकोक्तियो का प्रयोग हुआ है। सहजता और मौलिकता का उनके काव्य मे संगम मिलता है। जिससे अभिव्यक्ति मे विशिष्टता आती है।

(4) अलंकारों का स्वभाविक प्रयोग :- घनानंद ने अलंकारों का प्रयोग भावों की तीव्रता को व्यक्त करने के लिए किया है।

* सारांश :- घनानंद रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रमुख कवि है घनानंद का शृंगार है और प्रेम वर्णन रीति की बंधी - बंधाई परिपाटी से अलग है घनानंद के प्रेम की प्रेरणा सुजान थी । इनकी कविता मे सहयोग का अवसर कम है वियोग की अभिव्यक्ति अधिक है।

Hindi

13/8/2023

पाठ - 5

घनानन्द

प्रश्न 1 घनानंद के काव्य में प्रेम की पीड़ा और रूप की छटा का जो चित्रण हुआ है वह रीतिकालीन काव्य में अनुठा है। उदाहरण सहित समझाइये।
→ अथवा →
घनानंद प्रेम के पीर कवि थे, इस आधार पर घनानन्द के काव्य का मुल्यांकन कीजिए।
→ अथवा →
प्रेम अभिव्यंजना के लौकिक एवं अलौकिक आधारों का वर्णन करते हुए घनानन्द के काव्य में वर्णित प्रेम अभिव्यंजना के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए

उत्तर रीतिकालीन काव्य धारा में रीतिमुक्त कवि घनानन्द का स्वच्छन्द प्रेम काव्य में अहम स्थान है। रीतिकाल मुक्त कवियों में (बोधा, ठाकुर, आलम) सभी रीतिकाल मुक्त कवियों में श्रृंगार घनानन्द अपने प्रेम अभिव्यंजना के लिए प्रसिद्ध कवियों की श्रेणी में माने जाते हैं। इस काल के कवियों में श्रृंगार और प्रेम का वर्णन उत्सुकता भाव से कीया है। रीति रसिद्ध कवि जैसे बिहारी ने भी अपनी रचनाओं प्रेम व वासना की अभिव्यंजना का मांसल रूप प्रस्तुत कीया। रीतिकालिन कवियों के अनुसार प्रेम, स्थुल, मांसल, व भाव्य सौन्दर्य पर आधारित था। आन्तरिक सौन्दर्य एवं हृदय गत अनुभूति का अभाव था। रीतिमुक्त कवि हमेशा ही स्वच्छन्दता के समर्थक रहे थे। इन्होंने भी प्रेम की अनुभूति का अति सुक्ष्ममयी चित्रण कीया है।

प्रेम के पीर कवि और स्वच्छन्द कवि घनानंद सबसे अग्रणी माने जाते है। घनानंद का प्रेम बुद्धि प्रस्तुत (बुद्धि के अनुसार) उनका प्रेम भावात्मक है जो दिल की अंतः गहराई तक समाहित है। अपने प्रेम की निर्मलता को काव्य में प्रस्तुत किया है।

लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना :=>

घनानंद के काव्य से ज्ञात होता है कि वे सुजान के रूप सौन्दर्य पर मुग्ध थे लेकिन सुजान का साथ न जाना सुजान के द्वारा प्रेम न करना आदि के कारण घनानन्द बहुत व्यथित रहने लगे और निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये और इसी कारण अपनी रचना में के रूप सौन्दर्य और श्रृंगार का चित्रण अलौकिक में करने लगे।

जैसे->

घनानंद जीवन प्राण सुजान।
तिहारीय बननी (बात) लीजिए जू।
रोज नीत नीकि (सुन्दरता) रहो तुम चाहू (चाहना) कहाँ
वे अनीत हमारिय (हमारा) लीजिए जू।।

=> प्रेम जन्य वेदना :=>

घनानंद प्रेम के पीर कवि माने जाते है। उनका हृदय प्रेम की पीड़ा से भरा पड़ा है वे हमेशा सुजान के दर्शन व मिलने के लिए उत्सुक रहते है। घनानन्द निरंतर सुजान की मिलने की चाह रखते थे। लेकिन सुजान दरबार

को छोड़कर नही आ सकती थी। इसी कारण अपनी पीड़ा को सुजान के माध्यम से काव्य सजीव रूप देते रहे।

प्रेमानुभूति की तीव्रता :=> प्रेम की विभिन्न दशाओं को घनानंद ने अच्छी तरह पहचाना था और व्यवहारिक रूप से प्रेम की अनुभूति की और इसी कारण इनका प्रेम हृदयगत प्रेमभाव रहा है। जैसे

हिये में जो आरति सु जागति उजागति है।
मारती मरोरे जियहारति कहाँ करौं।
रसना पुकारी के विचारि पचिहारि जाति।
कहे कैसे अ कह उपवेश संधि के मरौं।

इस प्रकार घनानंद कहना चाह रहे हैं कि प्रेम की अनुभूति के अनुरूप शारीरिक कष्ट पहुँचने के साथ-साथ उद्देश्य पूर्ण जीने की ओर अग्रसर करता है।

पूर्वानुरागमय प्रेमभाव :=> घनानंद के हृदय में है सुजान के प्रति व उसकी स्मृति के प्रति गहन प्रेमभाव व्यक्त हुआ है। जैसे ही यह सुजान से विलग (अलग) हुये प्रेम की अनुभूति पूर्वरूप काव्य में देखने को मिलने लगा। सुजान को प्रेम में रस मूर्ति समझकर ही एक चाहत के रूप में अलमस्त में ... घनानंद ... के काव्य में

देखने को मिलता है। इनकी रचनाओं मे वासना का पुट न के बराबर दिखाई देता है।

इस तरह कहा जा सकता है कि घनानंद का प्रेम एक " पवित्र प्रेमभाव " है।

प्रेम का एकांकीपन :=> घनानंद का प्रेम लौकिक प्रेम होते हुये भी एकांकी प्रेम कहलाता है। वह अपनी प्रेमिका से अत्यधिक प्रेम करते है। वह चाहे निठुर ही क्यो ना हो घनानंद की तरफ से किसी अन्य प्रेम को " अपने जीवन मे प्रवेश नहीं दिया। अपनी दर्द भरी कथाओ काव्य के माध्यम से कम करने का प्रयास किया गया।

निष्कर्ष :=>

कहा जा सकता है कि घनानंद ने अपने प्रेम पीर की अत्यधिक गहन अनुभूति के माध्यम से प्रस्तुत किया है। मार्मिक अभिव्यंजना घनानंद के काव्य की मुख्य विशेषता है। प्रारम्भ मे घनानंद का काव्य लौकिक प्रेम की अनुभूती कराता है परन्तु बाद मे सुजान के न मिलने से अपने काव्य का रूप अलौकिक की तरफ अग्रसर करने लगे।

७/७/२०२३ पाठ-५ घनानन्द (कवित्त)

व्याख्याएँ :-

अवतरण-1. "भोर ते साँझ लौं कानन ओर निहारति बावरी नेकु न हारति। ... आँखिन मोहन सोहन जोहन की लगीयै रहै, ... के उर आरति।।"

प्रसंग :- यह अवतरण "घनानन्द" द्वारा रचित "घनानन्द कवित्त" में संकलित सुजान प्रेम से लिया गया। इसमें कवि ने विरही नायिका का चित्रण किया है। जो कि प्रियतम की लगातार प्रतीक्षा करती है। परन्तु उसके सामने आ जाने पर निमेष अश्रुपात (आँसू गिरना) के कारण देख नहीं

व्याख्या :- कवि "घनानन्द" वर्णन करते हैं कि विरहणी नायिका सुबह से लेकर साँय काल तक जंगल की ओर देखती रहती है और बावली बनी हुई वहीं थोड़ा भी नहीं थकती है। प्रियतम कृष्ण गोचारण कर वन से घर आयेंगे इस लालसा से वह वन की भाँति लगातार निहारती रहती है। इसी प्रकार वह साँय काल से लेकर सुबह तक अर्थात सारी रात तारों को ताकती रहती है और पुतलियों से एक टक देखते रहने पर भी तारों को देखना नहीं छोड़ती है। अर्थात प्रियतम की आगमन की आरत्य एवं विरह व्यथा के कारण जागती रहती है और कभी प्रियतम

संयोग वश उसे दिखाई देता है अर्थात उसकी दृष्टि में दिखाई पड़ता है तो निमंत्रण आँसुओं को बहाने से यह दर्शन सुख का अपकार भी गया देती है। भाव यह है कि लगातार अश्रु पात होने से उसकी दृष्टि धुंधली पड़ जाती है तथा प्रियतम को वह देख नहीं पाती है। कवि घनानन्द कहते हैं कि उस विरहणी नायिका की दशा बड़ी विचित्र है वह प्रियतम कृष्ण को सम्मुख देखने की प्रबल लालसा रखती है उसकी आँखें उस ओर लगी रहती हैं तथा कृष्ण को हृदय में देखने की लालसा सदा बनी रहती है।

विशेष:-
① "आँसुनि औसर गारति" का आशय यह है कि उस नायिका के आँसु क्या निकले वह अवसर ही टपक कर निकल गया। आँसुओं के साथ ही यह सुअवसर भी बीत गया, और वह सम्मुख प्रियतम को भी नहीं देख सकती।

② सभंग पद तथा अभंग पद यमक का छेका अनुप्रास और काव्य लिंग अलंकारों का सुंदर सुन्दर प्रयोग हुआ है। सवैया छंद की गति, यति प्रशस्य है।

घनानन्द की व्याख्याएं ->

उदाहरण - ②
नैनन में लागैं जाय, जागैं सु करेजे बीच --
आशा की विषम कटाक्ष - सर
चोट है।

व्याख्या :->
कवि घनानन्द एक विरहणी की आन्तरिक व्यथा को बताते हुए कह रहे हैं कि प्रियतम आंखो में इस तरह बस गये गए हैं कि किसी अन्य वस्तु को देखने या आंखे खोलने से ही हृदय में दुख का गहन आभास होता है। आगे कवि कह रहा है कि जो सहयोग काल का समय व्यतीत किया गया था बस उसी समय को याद कर-कर के वह देहरी से आनंदित या धीरता से लोट-पोट हुए जाते हैं। लेकिन वियोग के इस दुख में एक विरहणी के रोम-रोम में दुख का आभास होता है और पूरा शरीर व्याकुल हुए रहने लगता है। तथा एक विरहणी अपने दुःख को इसी आस में भुलती रहती है। कि एक दिन प्रियतम से मिलन जरूर होगा। कवि कह रहे हैं कि प्रियतम सुजान् बस जीवन में अपने हाथो से आंखो को बंद कर दे तो और किसी बात की चाहत नहीं है। जब-जब प्रियतम की याद आती है तब-तब मन में उल्लास भर जाता है।

लेकिन इस वियोग परिस्थिति। ऐसा महसूस करती है कि शरीर पर किसी ने चोट मार दी हो। उ
उक्त पद्यांश में (क) नायिका की विरह स्थिति का चित्रण किया गया है। मन की आन्तरिक व्यथा (दुख) को प्रसन्न करना बताया गया है।

विशेष:=> (i) घनानन्द स्वच्छन्द काव्य धारा के प्रमुख कवि है। भाषा

(2) भाषा में ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया।
(3) काव्य में ब्रज भाषा का प्रयोग किया गया।
(3) लाक्षणिक मुहावरो का भी प्रयोग किया गया।
(4) भाषा में मार्मिकता और उत्कृष्टता दिखाई देते है।

अवतरण ③ :-> "जासौं प्रीति ताहि निठुराई सों निपट नेह आपने रहै ऐसे दोष काहि धौं लगाइये॥"

व्याख्या:-> इस कवि कह रहा है कि नायिका के द्वारा जिससे प्रेम किया जाता है वह उसी के साथ निठुराई से प्रेम करती रहेगी। विरहणी रस प्रेम के कारण हमेशा विरह की आग में जलती रहती है। लेकिन इस दुख को जता नही पाता है। ऐसे महान निर्दय प्रेम के साथ यह जीव कैसे खुश रह पायेगा। एक विरहणी की इसी कारण

वेदना ~~बढ़~~ बढ़ती ही जाती है तो दुःख का बखान करना जीवा का काम होता है। मुख हमेशा किसी ना किसी रूप में कई बातें बाहर निकालता है। नायिका कह रही है कि कैसे प्रेमी के मुख को देखना जो प्रेम नहीं करता व्यर्थ है रात दिन किस प्रकार का चयन नहीं मिलता है एक विरहणी के भाग्य में यह लिखा होता इसके लिए अपने आप में दोष देना उचित नहीं है।

Hindi

सेनापति — रीतिकालीन काव्य

9/2023

प्रश्न-① मानहु प्रवाल ऐसे ओंठ लाल - लाल
भुज- कंचन मृनाल तनु चम्पक की माल है,
लोचन विसाल, दोखि मोहे गिरधर लाल
आज तुही बाल, तीनि लोक में रसाल है।
तेरि तरुनाई सेनापति बानि आई चाल,
चपाति सुहाई मानो मंथर मराल है,
नीकै देखि पाई, मो पै बरनि न जाई तेरी
देह की निकाई सब नेह की मसाल है।

प्रसंग =>
प्रस्तुत अवतरण कवि सेनापति द्वारा रचित श्रृंगार वर्णन से लिया गया है। इसमें कवि ने नायिका के रूप - सौन्दर्य का वर्णन किया है।

व्याख्या :=> कवि सेनापति नायिका को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि तेरे होंठ मूंगा की तरह लाल है तेरी भुजाये मानो स्वर्ण कमल की नाल है, और तुम चम्पा की माला की तरह सुन्दर हो तेरी बड़ी - बड़ी आँखों को देखकर प्रियतम कृष्ण मोहित हो जाते है हे बाला नायिका! आज तो तुही तीनो लोको मे सुन्दर योबन रस से परिपूर्ण है। अब तो तेरा यौवन पूरे निखार पर है तथा तु ऐसी मंथर गति से चलती है मानो कोई हंस धीरे - धीरे चल रहा हो। मैने तो तुम्हे थोड़ा ही

देखा है। इसलिए मैं तुम्हारे सौन्दर्य का वर्णन नहीं कर सकता हूँ। है तुम्हारा रूप सौन्दर्य तो प्रकाशपुंज या जलती हुई मिसाल के समान है जिससे घर का सारा अन्धकार दूर हो जाता है।

विशेष :=>

① इसमें नायिका के होंट बाहुपाश तथा शरीर की सुन्दरता का वर्णन और उसकी मंथन चाल को आकर्षक बताया गया है।

② घर को प्रकाशित करने वाली मसाल रोशनी बताकर कवि ने उसके घर की आकर्षक दशा व्यंजन की है।

③ रूप सौन्दर्य का उहात्मक वर्णन है, अनुप्रास उपमा उत्प्रेक्षा तथा असंगति अलंकार प्रयुक्त है।

④ कवित छन्द की यति-गति प्रवाहमय है।

तरण-② बरन बरन तरु फूले उपवन-बन,
सोई चतुरंग संग दल लहियत है,
बंदी जिमि बोलत विरद बीर कोकिल हैं,
गुंजन मधुप गान गुन हायत हैं,
आवै आस-पास पहुपन की सुबास-सोई,
सोंधे के सुगन्ध माँझ सने गहियत हैं
सोभा को समाजु, सेनापति, सुख-साजु-याच,
आवत बसन्त रितु-राज कहियत है।

प्रसंग:-
प्रस्तुत अवतरण कवि सेनापति द्वारा ऋतु वर्णन प्रसंग से लिया है। इसमें बसंत ऋतु में ... बजार राजा की तरह पदस्थाकर को सार्थक बतलाया गया है।

व्याख्या => कवि सेनापति ऋतु का वर्णन करते हुए कहते हैं कि बसन्त ऋतु एक राजा के भाँति आ रहा है। बसन्त ऋतु में वनों और उपवनों में अनेक प्रकार के फूलों से फूले हुए पेड़ ही राजा की चतुरंगिणी सेना के रूप में सुशोभित हैं। बसन्त में तोते एवं कोयले ऐसे कूकती हैं मानो वे विरुदावली गा रही हैं और भौंरे गुण ग्रहण करते हुए गुनगान कर रहे हैं। बसंत में आस-पास से फूलों की आने वाली शोभी सुगन्ध भरी रहती है। इसी प्रकार राजाओं के महलों में भी सर्वत्र फूलों की सुगन्ध भरी रहती है। सेनापति कहते हैं कि शोभा के ऋतुराज बसन्त एक सार्थक राजा के भाँति आ रहा है।

विशेष - ① प्रकृति एवं ऋतु वर्णन की नवीन कल्पना शैली दर्शनीय

अनुप्रास, वीप्सा, पुनरुक्तिप्रकाश, सांगरूपक
और उपमा अलंकार का प्रयोग तथा
कवित छन्द का ललित सौन्दर्य

अनुप्रास, पदमैत्री, पुनरुक्तिप्रकाश, सांगरूपक और उपमा अलंकार का प्रयोग तथा कवित्त छन्द का लाल सौन्दर्य

सेनापति

प्र.1. सेनापति की काव्यगत प्रवृत्तिया, सेनापति काव्य सम्पूर्णता, सेनापति के काव्य की विवेचना, सेनापति काव्यगत विशेषताए का वर्णन कीजिए

उत्तर सामान्य परिचय :- सेनापति रीतिकाल के अर्तित समर्थ और प्रतिभा सम्पन्न कवि माने जाते है। वह अलंकार सम्प्रदाय के समर्थक थे। सेनापति की दो रचनाए -> (1) काव्य कल्पद्रुम (2) कवित रचना कर प्रसिद्ध है। इनकी रचनाओ के आधार पर सेनापति का काव्य सौन्दर्य निम्न शीर्षको मे स्पष्ट किया जा सकता है।

I भाव-पक्ष ->

(i) श्रृंगार वर्णन :-> सेनापति ने कवित रत्नाकर ग्रन्थ मे रितु और श्रृंगार का सरस वर्णन किया है। श्रृंगार के अन्तर्गत उन्होने कोमल, सरसकीया नायिका का अर्तित आंसल, चित्रण इस प्रकार किया है।

"कुसुम सौं बास कि बनाई गुही बेनी मान,
भाल दीनी बैंदी मृगमद की हंसी है,
अंग अंग भूषण बनाई ब्रज भूषण जू,
बीरी बंन नीज कर की खवाई अत रत है।"

(ii) भक्ति भावना निरूपण :-> सेनापति राम भक्त थे उन्होने राम की कृपा का वर्णन करते हुए। श्री राम की

स्तुती स्तुति महीमा, रूप सौन्दर्य, भक्ति, ध्यान तथा कर्म नाम आदि विभिन्न रूपकों का वर्णन किया है।

" आप तें कराल कालपूट कण्ठ मान्यो करें,
व्याल पर-भाल, आगी भाल सबही समें
व्याधि के अंग ऐसे व्यापि रहत्यो आधो अंग,
रखो आधो भंग सौं जीवा की पसीत में।"

3. प्रकृति चित्रण :→ सेनापति के काव्य में प्रकृति का मनोरम चित्रण हुआ है। उन्होंने षड् ऋतुओं का वर्णन करते हुए प्रकृति को उसके आलम्बन रूप उद्दीपन रूप में चित्रत-चीत्रित किया गया।

" बन्दी जिमी बोलत बिरद बीर कोकिल है,
गुजत मधुप मजगंनज गुज गाहियत है।
आवे आस-पास मधुपन की सुभाष सोई,
सौंध्य के सुगध माझ सने रहित हैं।"

कला पक्ष :→ काव्य सौन्दय की दृष्टि से सेनापति के काव्य का कला पक्ष अत्यन्त आकर्षक और भाव पूर्ण है।

(i) भाषा - सौष्ठव :→ सेनापति का ब्रज भाषा पर असाधरण अधिकार दिखाई देता है। साधारण शब्द भी सेनापति के साथ

में मौलिक की तरह असफल बन जाते हैं। सेनापति ने अनेक ततसम सम्भशब्दो के साथ तद्भव, देशज एवं फारसी के शब्दों का प्रयोग किया है। श्लेष व यमक के कारण कई शब्दो को तोड़-मोड़-मरोड़ा भी किया गया है।

(ii) मुहावरे एवं लोकोक्तिया :→
सेनापति ने अपने काव्य में भाषा गत सौन्दर्य एवं भाव गम्य संकलता लाने के लिए मुहावरो व लोकोक्तियो का प्रयोग किया गया है।

"मोरौ जान पोनो सीरो और सेयो पकरि कोनो, धारि एक बैठि कहुं धामे स्वीमतमत है"

(iii) शैली विधान :→
सेनापति की रचना कवित रत्नाकर मुक्तक शैली में लिखी गई है। इसमें पारिषे वार्य विषय के अनुसार कहीं वर्णात्मक एवं भावात्मक शैली है।

(iv) अलंकार विधान :→
सेनापति के काव्य में अलंकारो का परचुर मात्रा में प्रयोग हुआ है अतः रीतिकालीन कवियों की तरह तथा स्वयं अलंकार समपदार्थ का समर्थक होने से सेनापति ने अलंकार चमत्कार का पुरा प्रयास किया।
अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, रूपक, अतिशयोक्ति और उपमा अलंकारो का प्रयोग सेनापति के काव्य में समान्य मात्रा में किया गया है।

" बानरन राखैं तोरी तोरि, डारत हैं अरि लंकै,
जाके वीर लछमन बिराजत निदाने हैं।

निष्कर्ष -> इस तरह के विवेचन के आधार पर लंथेपन को श्लेष अलंकार कहा जाता है कि सेनापति का काव्य सौन्दर्य अत्यंत आकर्षक व मनोरम है।

(कवार - कवित्त शैली की जाती है)
(हरियाणा - भाषा में लिखा हुआ है)

7/11/2023

प्रश्न: सेनापति के काव्य में ऋतु वर्णन अथवा सेनापति के काव्य में प्रकृति-चित्रण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: सेनापति ने ऋतु वर्णन के अन्तर्गत प्रकृति के अनेक चित्र उभारे हैं परन्तु इन्हें विशेष ख्याती प्रकृति का आलम्बन रूप में वर्णन करने से प्राप्त हुई है। इनके काव्य में प्रकृति चित्रण एवं ऋतु वर्णन की विशेषताओं को निम्न शीर्षकों में समझा जा सकता है।

(1) प्रकृति का आलम्बन रूप :→

षड् ऋतुओं के वर्णन में सेनापति ने प्रकृति के अनेक वर्णों के चित्र उभारे हैं। इसके लिए सेनापति ने रीतिकालीन चमत्कार प्रदर्शन की प्रवृति नहीं अपनाई है तथा सीधे-सरल चित्रण द्वारा मार्मिकता व्यक्त की है। ग्रीष्म काल का सीधा-सरल एवं मार्मिक चित्रण इस दृष्टि दृष्टव्य है।

"जेठ नजिकाने सुधरत खसखाने तल'
ताख तहखाने के सुधारि झारियत है
होति है मरम्मति विविध जल जन्त्रन की
ऊँचे-ऊँचे अटा ते सुधारियत हैं।

(2) प्रकृति का उद्दीपन रूप :→

सेनापति ने यद्यपि उद्दीपन रूप में प्रकृति का चित्रण

कम ही किया है। फिर भी उनके रीति वर्णों में उद्दीपन विभाग ही तीव्रतः वर्णनीय है। काव्य में मनेक स्थानों पर प्रकृति के रमणीय रूप पर प्रिमोहित होकर उसका आकर्षण चित्रण किया है।

"छीतीन गरद मानों रहे हैं हरद स्वाली,
सोहत जलद को मिलाये हरि पीय कों
मत है दुरद को मिलाये खंजन दरद रितु
आई है सरद सुखदाई सब जीय कों।"

(3) सूक्ष्म निरीक्षण :-> प्रकृति के आन्चल में विहार करते हुए सेनापति की दृष्टि सूक्ष्म वस्तुओं प्रकार की ओर आकर्षित हुए बिना नहीं रही है। वर्णन करते हुए कवि प्रकार की वर्षा का

\# लिखता है।

"खण्ड-खण्ड सब दिग-मण्डल जलद सेत
सेनापति मानों मृग फटिक पहार के,
अम्बर, अडम्बर सों उमड़ घुमड़ छिन
छिटके छछारे छीती अधिक उधार के।

(4) तत्कालीन प्रभाव :-> साहित्यिक परम्परा के वर्णन साथ-साथ ही प्रकृति चित्रण परिस्थित का में तत्कालीन सामाजिक प्रभाव यत्र-तत्र पाया जाता है।

उस काल के कवियों को अपने आश्रयदाता राजा की शृंगार - पिपासा की पूर्ति हेतु काव्य रचना करनी पड़ती थी। उनके सामने करनी पड़ती थी अधिकांशत राज दरबारों की चमक - दमक ठाट - बाट ही रहते थे। सेनापति ने भी प्रचलित प्रथा के अनुरूप अपने रितु वर्णन में राज प्रसादों की स्थिति का ही अधिक वर्णन किया है।

(5) जनसाधारण की चित्रण :->

कवि ने आम जन का सुंदर चित्रण किया है जैसे उन्होंने साहित्य परम्परा को तोड़कर प्रकृति का निखरा रूप हमारे सम्मुख रखने का प्रयत्न किया है उसी प्रकार सामाजिक विषमताओं की ओर भी उनका ध्यान गया है।

" हिम के समीर तेई बरसें विषम तीर
रही है गरम भौन कौनन में जाई के
धूम नैन बहे लोग आगि पर गिर रहें
हिय सों लगाई रहें नैक सुल गाइ कें।"

निष्कर्ष :->

संक्षेप में कहा जा सकता है कि सेनापति ने प्रकृति के सौन्दर्य का मनोहारि चित्रण किया है। उन्होंने इन सभी प्रवृत्तियों को अपने काव्य में स्थान दिया है जिन्हें आगे चल कर रितु कालीन कवियों ने बहुत सम्मान दिया।